Madhulika (Hindi Pathyapustak) Class - 7

7 हिंदी (मधुलिका)

1. मैं सबसे छोटी होऊँ

मौखिक

(क) क्योंकि वह जान चुकी है कि माँ उसके साथ तब तक ही ऐसा लाड़-प्यार करेगी, जब तक वह बच्ची है।

(ख) बच्ची इसलिए ऐसा कह रही है क्योंकि जब बच्चे बड़े हो जाते हैं तो माँ हमेशा उनका हाथ पकड़कर नहीं चलती। अपने हाथ से खाना नहीं खिलाती, मुँह साफ़ नहीं करती और परियों की कहानियाँ भी नहीं सुनाती।

(ग) अपनी गोदी में सुलाती है, दूध पिलाती है, खिलौनें से खिलाती है, लाड-दुलार करती है और अपने आँचल की छाया में बच्चे को छुपा कर रखती है।

लिखित

1. (क) बचपन से बड़ा बनाने को बच्ची ने माँ का धोखा माना है।
   (ख) माँ के आँचल में बच्ची स्वयं को लालसा-रहित और सुरक्षित महसूस करती है।
2. (क) बच्ची सदा छोटी रहकर माँ का आँचल पकड़कर सदा उसके साथ फिरना चाहती है। वह चाहती है कि वह माँ का हाथ कभी न छोड़े।
   (ख) बच्ची ऐसा इसलिए कहती है कि कहीं बड़ी होकर वह माँ का प्यार न गँवा बैठे। वह कहीं माँ के आँचल की सुरक्षा न खो बैठे। वह सदा छोटी रहकर कहना चाहती है–माँ, माँ! मुझे चंद्रमा का उगना दिखा दो।
3. 1. (घ), 2. (क), 3. (ग)
4. प्रस्तुत पंक्तियाँ छोटी बच्ची का माँ के प्रति गहरा स्नेह प्रदर्शित करती हैं। बच्ची कहती है कि छोटी रहते माँ हमारा हाथ पकड़े दिन-रात फिरती है लेकिन हमारे बड़ा होने पर वह ऐसा नहीं करती अर्थात हमें माँ के स्नेह से वंचित होना पड़ता है।
5. **संकेत :** नहलाना-धुलाना, कपड़े बदलना, खाना खिलाना, अपने साथ घुमाने ले जाना, कहानियाँ सुनाना, क ख ग पढ़ाना, अब ये कार्य स्वयं करते हैं, माँ खाना बनाती है लेकिन खुद खाते हैं, माँ कपड़े धोती हैं लेकिन खुद पहनते हैं, आदि।

भाषा-बोध

1. (क) छोटे बच्चों को पकड़-पकड़कर नहलाना पड़ता है।
   (ख) जोकर के कारनामे देखकर बच्चे हँस-हँसकर तालियाँ बजाने लगे।
   (ग) खेल-खेल कर मैं तो थक गया।
   (घ) वह छिप-छिपकर गली से भाग निकला।
2. (क) बच्ची–बालिका, लड़की
   (ख) अंचल–आँचल, ओढ़नी
   (ग) मात–माँ, माता
   (घ) कर–हाथ, हस्त
   (ङ) चंद्रमा–चंद्र, शशि
3. गुरु – द्रोणाचार्य राजकुमारों के गुरु थे।
   – आज बुधवार है और कल गुरुवार।
   सोम – देवता सोम रस पीते हैं।
   – कल इतवार था आज सोमवार है।
4. केवल समझाने हेतु।

रचनात्मक कार्य

1. **संकेत :** खाना पकाना, कपड़े धोना, घर की सफ़ाई करना, घर की सब चीज़े सँभालना व व्यवस्थित करना, बाज़ार से ज़रूरी सामान खरीदना, मेहमानों की आवभगत करना, बच्चों को स्कूल भेजना, बच्चों को पढ़ाना, आदि।
2. बच्चे अपने विचार प्रकट करें।
3. **'मुझे बड़ा तो कुछ होने दो माँ'– संकेत :** खाना पकाने में इतना समय नहीं लगाना पड़ेगा; रसोई के लिए आधुनिक उपकरण लाऊँगा; सामान इकट्ठा करने बाज़ार नहीं जाना पड़ेगा; सब सामान मैं लेकर आऊँगा; अपना सब काम तो स्वयं करूँगा ही, तुम्हारा भी आधा काम मैं किया करूँगा; थकने पर तुम्हारी सेवा करूँगा; तुम्हें कोई तकलीफ़ नहीं होने दूँगा।

2. संचय की शक्ति

मौखिक

(क) मोती टापू एक बहुत छोटी बस्ती है। रेलगाड़ी वहाँ नहीं पहुँचती है। शहर जाने के लिए लोगों को एक नहर तक पाँच-छह मील पैदल चलकर जाना होता है। नहर के किनारे पहुँचकर रातभर नाव में सफ़र करके, चार-पाँच मील ताँगे में चलने पर गोर्तिपाडु नाम का एक छोटा गाँव आता है। गाँव से चालीस मील बस में जाने पर शहर आ जाता है।

(ख) कपड़ों, पेंसिलों और किताबों को खरीदकर।

(ग) कि पैसा कितनी ज़रूरी चीज़ है, उसे कैसे कमाया जाता है, उसे कितनी किफ़ायत के साथ खर्च करना चाहिए और पैसे के बिना क्या-क्या मुसीबतें हो सकती हैं।

(घ) क्योंकि अप्पाराव अब सिगरेट भी पीने लगा था।

(ङ) अमेरिका जाने के लिए बस्ती से किसी बड़े शहर तक आना होता है। अगर लंदन होते हुए जाएँ तो यहाँ से लगभग दस हज़ार मील दूर है। हवाई जहाज से तीन-चार दिन में वहाँ पहुँच सकते हैं और समुद्री जहाज से लगभग पच्चीस दिन लगते हैं।

लिखित

1. (क) अप्पाराव इकलौता बेटा था इसलिए उसके पिता उसे नाराज़ नहीं करना चाहते थे।
   (ख) एक दिन उन्हें पता चला कि अप्पाराव सिगरेट पीने लगा है। तब वे बहुत निराश होकर रोए।
   (ग) उसे डर लग रहा था कि मास्टर जी न जाने कौन-सा सवाल पूछ लें इसलिए उसका मन घबरा रहा था।
   (घ) चंद्रलोक में जाने का दूसरा तरीका था–विज्ञान की ऊँची शिक्षा पाकर डिग्रियाँ प्राप्त करना।
2. (क) अप्पाराव खाने का पूरा शौकीन था। वह रोज़ इडली-डोसे खाता था, दिन में कई बार कॉफ़ी पीता था। फेरी वालों से चटपटी और नमकीन चीज़ें खरीदकर खाता था। यदि वह कभी पड़ोसी गाँव में लगे बाज़ार में पहुँच जाता तो वहाँ भी जमकर खाता।
   (ख) उस समय अप्पाराव के मन में अनेक विचार उठे। वह सोचने लगा कि मास्टर जी न जाने क्या-क्या सवाल पूछेंगे। शायद वे नया सबक सुनें, शायद वे पहाड़े सुनें। हो सकता है वे गणित के प्रश्न हल करवाएँ। इस प्रकार के विचारों से वह बेचैन हो उठा।
   (ग) चंद्रयान की तसवीर देखकर वह जानना चाहता था कि क्या चंद्रमा पर जाया जा सकता है। यदि जाया जा सकता है तो कैसे और कहाँ से। और वहाँ तक जाने में कितना खर्चा आएगा।
3. 1. (क), 2. (ख), 3. (क), 4. (घ), 5. (घ)
4. (क) अप्पाराव मास्टर जी से चंद्रलोक पहुँचने का ढंग सीख रहा था। चंद्रलोक तक पहुँचने का खर्चा सुनकर उसका मन बैठ गया। वह चंद्रलोक जाने की इच्छा तो रखता था लेकिन उसने इतने खर्च की कल्पना तक न की थी। जब वह पूरी तरह निराश हो गया, तब मास्टर जी ने बताया कि वहाँ पहुँचने का एक तरीका और भी है। मास्टर जी की बात सुनकर उसे हैरानी तो हुई लेकिन मन में नया उत्साह जाग उठा।
   (ख) मास्टर जी की बातें सुनकर अप्पाराव को पैसे (धन) का महत्त्व समझ में आ गया। तब उसे एहसास हुआ कि वह कितनी फ़ज़ूलखर्ची करता है। ऊँचे सपने धन से ही पूरे होते हैं। मास्टर जी की बातें सुनकर उसने मन में निश्चय कर लिया था कि अब वह फ़ज़ूलखर्ची नहीं करेगा। वह बिलकुल नया, अलग अप्पाराव बन गया।
5. **संकेत**–शिक्षक सच्चे मार्ग-दर्शक, अपने विद्यार्थियों की मानसिकता समझ सकते हैं, सीधे भाषण न देकर उदाहरण द्वारा समझा सकते हैं, शिक्षक का विद्यार्थियों पर विशेष प्रभाव।

   संकेत–फ़ज़ूलखर्च बढ़ जाता, आलसी और कामचोर बन जाता, अपनी ज़रुरतें पूरी न कर पाता, बुरी आदतों, बुरी संगत का शिकार हो जाता, बुरे काम करता, गरीबी और उदासी में जीवन बिताता।

भाषा-बोध

1. (*i*) रुपया और पैसा, (*ii*) बाप और बेटा, (*iii*) गुरु और शिष्य, (*iv*) गाँव और नगर, (*v*) खाना और पीना
2. (*i*) **कुछ-न-कुछ**–कुछ-न-कुछ तो टूटा है।
   (*ii*) **चलती-फिरती**–यह गाड़ी तो चलती-फिरती दुकान है।
   (*iii*) **जान में जान आना**–जब मेरे खोए पैसे वापस मिले, तब मेरी जान में जान आई।
   (*iv*) **पानी की तरह पैसा बहाना**–सोच-समझकर खर्च करो। पानी की तरह पैसा मत बहाओ।
3. (क) पानी की तरह पैसा बहाना पड़ेगा।
   (ख) नाव में चवन्नी लगेगी।
   (ग) ऊँची शिक्षा पाना इतना आसान नहीं होगा।
   (घ) क्या हमारे गाँव में हवाई जहाज़ आएगा।
4. (*i*) छुटपन, (*ii*) बुलवाई, (*iii*) लड़कपन, (*iv*) लड़ाई, (*v*) खालीपन, (*vi*) सिलाई, (*vii*) अकेलापन, (*viii*) कमाई, (*ix*) सूखापन, (*x*) पढ़ाई

रचनात्मक कार्य

1. **संकेत :** धन सदा महत्त्वपूर्ण, आज बहुत अधिक महत्त्वपूर्ण; धन के बिना अधिकतर कार्य संभव नहीं; खाना-पीना, घूमना-फिरना, मौज-मस्ती, पढ़ाई-लिखाई आदि के लिए धन चाहिए; घरेलू सुविधाओं के लिए धन चाहिए; परोपकार के लिए धन चाहिए; तीर्थ-यात्रा और अन्य धार्मिक कार्यों हेतु भी धन चाहिए; समाज में मान-सम्मान के लिए भी धन चाहिए।

2. **संकेत :** फ़ज़ूलखर्ची अच्छे चरित्र की शत्रु, अच्छे स्वास्थ्य की भी शत्रु, बेकार आदतों का विकास, फ़ज़ूलखर्च बच्चे ज़िद्दी होते हैं, आलसी और कामचोर भी होते हैं, अस्वस्थ होने का पूरा खतरा, फ़ज़ूलखर्च बच्चों को सच्चे दोस्त नहीं मिलते, केवल कुछ स्वार्थी उन्हें घेर लेते हैं, फ़ज़ूलखर्ची से अच्छी संगत न मिलने का खतरा, इस आदत के कारण व्यक्ति गरीबी में रहने को मजबूर हो सकता है।
3. बच्चे अपने विचार स्वयं गर्व एवं उत्साह से प्रकट करें, इसके लिए उनका मार्ग-दर्शन करें।
4. **संकेत :** लगभग दो लाख; पासपोर्ट, वीज़ा आदि।
5. **अंतरिक्ष में भारत के बढ़ते कदम : संकेत :** भारत का पहला उपग्रह 'आर्यभट्ट' 1974 ई० में अंतरिक्ष में, 1981 में 'एप्पल' उपग्रह छोड़ा, इनके बाद 'रोहिणी', 'भास्कर' इन्सेट 1-ए, 1-बी तथा 1-सी आदि अनेक उपग्रह छोड़े जा चुके हैं, भारत चंद्रमा पर भी चंद्रयान पहुँचा चुका है, मंगल ग्रह पर यान छोड़ चुका है, भारत के श्री राकेश शर्मा अंतरिक्ष की यात्रा कर चुके हैं।

3. सर्वोच्च साहस

मौखिक

(क) जो साहस अपनी इच्छापूर्ति के लिए किया जाए उसे निम्न श्रेणी का साहस कहते हैं।

(ख) दो राजपूत बादशाह के पास नौकरी के लिए आए थे।

(ग) मारवाड़ के बुद्धन सिंह की कर्तव्यपरायणता, वीरता और सत्साहस से अपनी मातृभूमि की रक्षा करने की घटना से।

(घ) हृदय की पवित्रता, उदारता और चरित्र की दृढ़ता। एक महत्वपूर्ण गुण और आवश्यक है– कर्त्तव्य परायणता। हाथ-पैर की बलिष्ठता और धन-मान का होना आवश्यक नहीं है।

लिखित

1. (क) बिना साहस के छोटा-बड़ा कोई काम संभव नहीं, न ही किसी जाति या देश का इतिहास बन सकता है।
   (ख) उसके मन में यह सोच होनी चाहिए कि जो कुछ मैंने किया, वह केवल अपना कर्तव्य किया।
   (ग) स्वार्थ रहित होकर कर्तव्यपरायण बनने को लेखक ने सत्साहस कहा है।
   (घ) मारवाड़ के लोग देशभक्त बुद्धनसिंह को याद करते हैं।
2. (क) लेखक के अनुसार मध्यम श्रेणी का साहस शूरवीरों में पाया जाने वाला साहस है। इस प्रकार के शूरवीर निर्भीक, बेपरवाह और स्वार्थहीन होते हैं परंतु उनमें ज्ञान की कमी होती है।
   (ख) राजपूत युवकों ने घोड़े पर सवार होकर युद्ध करना आरंभ कर दिया। दोनों एक-दूसरे पर वार करने लगे। युद्ध करते-करते दोनों घोड़ों से नीचे आ गिरे और मर गए। ऐसा साहस भले ही प्रशंसनीय हो लेकिन उसे अज्ञानता का प्रतीक माना जाएगा।
   (ग) सत्साहसी में एक ऐसी गुप्त शक्ति होती है जिसके बल से वह किसी अनजान व्यक्ति के प्राण बचाने को भी तत्पर हो जाता है। उसी शक्ति की प्रेरणा से वह अपने प्राणों की ज़रा भी चिंता नहीं करता और हर प्रकार का दुख प्रसन्नतापूर्वक सहन करता है। उसके मन में स्वार्थ के विचार नहीं आते।
   (घ) बुद्धनसिंह का उदाहरण हमें देशभक्ति की प्रेरणा देता है। यह हमें सिखाता है कि यदि देश पर संकट आ जाए तो सब प्रकार के भेदभाव समाप्त हो जाने चाहिए। तब जी-जान से मातृ भूमि की रक्षा करनी चाहिए।
3. 1. (घ), 2. (ख), 3. (ख), 4. (ख)
4. साहसी व्यक्ति ही इतिहास में स्थान बनाते हैं। साहसी लोगों को ही दुनिया याद करती है। अर्जुन, भीम, भीष्म, अभिमन्यु ने अदम्य साहस का परिचय दिया। भीष्म और अभिमन्यु को तो महाभारत के युद्ध में अपने प्राण तक गँवाने पड़े लेकिन वे अपने कर्तव्य से पीछे नहीं हटे। इसीलिए उनके बारे में ऐसा कहा गया है।
5. **संकेत : सत्साहस :** कई लोग आज भी दूसरों की जान बचाने के लिए अपनी जान की बाज़ी लगा देते हैं, कई महिलाओं की सुरक्षा के लिए बदमाशों से भिड़ जाते हैं, कुछ लोगों ने अपनी जान जाने का खतरा उठाकर भी लुटेरों को पकड़ा है, आतंकवादियों के अपवित्र कार्यों को होने से रोका है।
   दुस्साहस–कुछ लोग फ़िल्मी स्टंट की नकल कर जान गँवा देते हैं या अपंग हो जाते हैं, कुछ अपहरण, लूट-पाट, ठगी, डकैती और स्त्रियों की इज़्ज़त लूटने में संलिप्त हैं, कुछ अपने देश की जासूसी कर शत्रुओं को महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ प्रदान कर देते हैं।

भाषा-बोध

1. (क) (*i*) साहस, (*ii*) विचार, (*iii*) निर्भीकता, (*iv*) ज्ञान, (*v*) पवित्रता, (*vi*) उदारता
   (ख) (*i*) प्रशंसनीय (*ii*) साहसी, (*iii*) सम्मानीय, (*iv*) क्रोधी, (*v*) पूजनीय, (*vi*) ज्ञानी, (*vii*) वर्णनीय, (*viii*) गुणी (*ix*) दर्शनीय, (*x*) स्वार्थी

2. (क) (*i*) परमाणु, (*ii*) देहांत, (*iii*) धर्मार्थ, (*iv*) योगाभ्यास, (*v*) अधिकांश, (*vi*) शब्दार्थ

(ख) (*i*) चंद्र + उदय, (*ii*) सर्व + उत्तम, (*iii*) वसंत + उत्सव, (*iv*) सूर्य + उदय, (*v*) लोक + उक्ति, (*vi*) पुरुष + उत्तम

3. (क) (*i*) निस्तेज, (*ii*) निस्संतान, (*iii*) निस्संकोच, (*iv*) निष्कपट, (*v*) निस्सहाय, (*vi*) निष्कर्ष

(ख) (*i*) अपरिचित, (*ii*) अपवित्र, (*iii*) अनुचित, (*iv*) अनुदार, (*v*) अज्ञान, (*vi*) अपमान

(ग) (*i*) निर्मित, (*ii*) चलित, (*iii*) प्रभावित, (*iv*) पठित, (*v*) पठित, (*vi*) प्रकाशित, (*vii*) उत्तेजित

रचनात्मक कार्य

1. लव-कुश, भरत, चंद्रशेखर आज़ाद, भगतसिंह, रामप्रसाद बिस्मिल, लाला लाजपतराय, अश्फ़ाक उल्ला खाँ आदि।

2. **संकेत : मदर टेरेसा :** कुष्ठ रोगियों की सेवा की, उनके कल्याण के लिए कई प्रकार के कार्य किए।

कबीर : आडंबरों पर प्रहार किया, सच्ची भक्ति का मार्ग दिखाया।

लक्ष्मीबाई : अपने देश की रक्षा हेतु प्राण न्योछावर कर दिए।

स्वामी विवेकानंद : भारतीय अध्यात्म तथा हिंदू धर्म का पक्ष पूरे विश्व के सामने रखा। पूरे देश की छवि को उज्जवल किया।

3. बच्चों का उत्साहवर्धन एवं मार्ग-दर्शन करें।

4. अनुठा राज्य : तमिलनाडु

मौखिक

(क) तमिलनाडु भारत की दक्षिणी सीमा पर स्थित एक तिकोनी आकृति वाला प्रदेश है।

(ख) चेन्नई के समुद्र-तट पर रेत पर चलने में एक अलग ही रोमांच है। परिवारों की टोलियाँ, मित्रों के झुंड, मस्ती मारते हुए बच्चे बहुत अच्छे लगते हैं। समुद्र-तट पर ही कण्णगी की मूर्ति स्थित है। यहाँ महालक्ष्मी का मंदिर भी है।

(ग) महाबलिपुरम चेन्नई से लगभग 52 किलोमीटर दूर है। यहाँ समुद्र के कगार पर एक मंदिर बना हुआ है। इसका काफी हिस्सा जलमग्न हो चुका है। पहले यहाँ सात मंदिर थे। अब केवल एक बचा है। छह मंदिरों को सागर लील गया। इन मंदिरों को सातवीं सदी में एक पल्लव राजा ने बनवाया था। ये मंदिर पत्थर की चट्टानों को तराशकर रथ के आकार में बनाए गए।

(घ) कांचीपुरम में पल्लव राजाओं ने अनेक बड़े-बड़े मंदिर बनवाए थे। इनमें से अनेक समय की भेंट चढ़ गए, फिर भी आज इस नगर में 130 से भी अधिक मंदिर हैं। यह भूमि शंकराचार्य, रामानुजाचार्य जैसे संतों की कार्य-स्थली रही है। यहाँ की रेशमी साड़ियाँ पूरे भारत में प्रसिद्ध हैं। इन साड़ियों पर ज़री का काम अद्भुत होता है।

(ङ) क्योंकि यहाँ सबसे अधिक मंदिर हैं।

लिखित

1. (क) लेखक ने किताबों में पढ़ा था कि तमिलनाडू उपजाऊ घाटियों वाला देश है, जहाँ धान की घनी पैदावार होती है।

(ख) तमिलनाडू में यह कहावत प्रचलित है कि ऐसे स्थान पर निवास मत करो जहाँ मंदिर न हो।

(ग) रामेश्वरम श्रीलंका के केवल 75 किलोमीटर दूर है और वहाँ रामनाथ स्वामी का मंदिर है।

(घ) कन्याकुमारी में तीन सागरों–अरम सागर, हिंद महासागर और बंगाल की खाड़ी का संगम होता है।

2. (क) चेन्नई के समुद्र-तट पर देवी कण्णगी की मूर्ति है। एक बार इसके पति पर चोर होने का संदेह किया गया था। उस पर आरोप लगा कि उसने रानी का नूपुर चुराया था और इसी कारण उसे मरवा डाला गया। देवी कण्णगी ने राज-दरबार में अपने पति को बेकसूर साबित किया।

(ख) पक्षी तीर्थ मंदिर के बारे में कहा जाता है कि काशी से रामेश्वरम जाते हुए दो पक्षी रोज़ दोपहर को वहाँ रूकते हैं। माना जाता है कि ये दो संत थे, जो किसी देवता के श्राप से पक्षी बन गए। वे पुरोहितों के हाथ पर से चावल चुगते हैं और विश्राम करते हैं।

(ग) मीनाक्षी मंदिर के गोपुरम भव्य व अति आकर्षक हैं। यहाँ हज़ार स्तंभों वाला मंडप है। इस मंडप के खंभों की विशेषता यह है कि इन्हें कहीं से भी किसी भी कोण से देखा जाए, वे एक सीधी रेखा में ही दिखाई देते हैं। भवन के अंतिम छोर पर एक अलग मंडप में नटराज की भव्य मूर्ति है।

(घ) यह कथा इस प्रकार है कि किसी कारण कन्याकुमारी का विवाह शिवजी से नहीं हो पाया था। तब कन्याकुमारी ने क्रोधित होकर विवाह के लिए एकत्रित सारी मांगलिक सामग्री जल में फेंक दी। सिंदूर, अक्षत, चंदन आदि के कारण वहाँ की रेत अलग-अलग रंगों की हो गई।

3. 1. (ख), 2. (ग), 3. (क), 4. (घ)

4. लेखक पर्यटन हेतु तमिलनाडू गए थे। रंगा स्वामी उनका गाइड था। गाइड का पेशा होता है पर्यटन स्थल से जुड़ी पूरी जानकारी पर्यटक को देकर उससे पैसे लेना। मित्रता के नाते गाइड ने नाश्ते का बिल देना चाहा लेकिन लेखक ने ऐसा न करने दिया। वे (लेखक) समझते थे कि ग्राहक होने के नाते बिल का भुगतान उन्हीं को करना चाहिए। वैसे नैतिकता भी यही बनती है।

5. **संकेत :** मछुआरों का पेशा अत्यंत कठिनाई भरा, छोटी-बड़ी नावों से गहरे समुद्र पहुँचना, मछलियाँ पकड़ना और बेचना, कई प्रकार के खतरों का सामना करना, समुद्र में अनेक प्रकार के तूफ़ानों का आना, फिर भी अधिकतर मछुआरों का खुशहाल जीवन न जीना।

भाषा-बोध

1. (क) सुंदरेश्वर, (ख) परोपकार, (ग) जन्मोत्सव, (घ) धर्मात्मा, (ङ) मतानुसार

2. (ख) चलती रेल **में** नींद आती है।
   (ग) मेरी यात्रा समाप्त होने **को** है।
   (घ) मैंने रेल **से** यात्रा की।
   (ङ) दो पक्षी दोपहर में यहाँ रुकते हैं।

3. समुद्र–पुल्लिंग, प्रदेश–पुल्लिंग, आकृति–स्त्रीलिंग, शिला–स्त्रीलिंग, घटना–स्त्रीलिंग, धर्म–पुल्लिंग, घाटी–स्त्रीलिंग

4. (ख) उपजाऊ, (ग) अधखिली, (घ) मछुआरा, (ङ) असंख्य, (च) ध्यानमग्न

रचनात्मक कार्य

1. पत्र संबंधी मार्ग-दर्शन करें।

2. **संकेत :** स्वामी विवेकानंद, बचपन में साथियों संग बाग में खेल रहे थे, बच्चों ने डराया–उस पेड़ के पास मत जाना, उस पेड़ पर भूत रहता है, नज़दीक जाना तो दूर स्वामी जी उस पेड़ पर जा बैठे, बच्चों के मन में संदेह दूर किया–कोई भूत-वूत नहीं होता, ये सब मन के वहम (भ्रम) होते हैं।

3. बच्चों को बोलने-बताने हेतु प्रोत्साहित करें।

4. **संकेत :** गाइड को पर्यटन स्थल से संबंधित पूरी जानकारी, कुछ विशेष प्रसंगों / कथाओं / घटनाओं की भी जानकारी, पर्यटकों को उससे रोमांचक व मनोरंजक जानकारी भी प्राप्त होती है, गाइड पर्यटन उद्योग को बढ़ावा देने में सहायक।

5.6. बच्चों को फ़िल्म देखने (विशेषकर 'सफ़ारी' फ़िल्म) व चर्चा करने हेतु प्रोत्साहित करे।

5. इतने ऊँचे उठो

मौखिक

(क) कवि धरती को स्वर्ग बनाने की कामना कर रहे हैं।
(ख) कविता में कवि युवाओं को जात-पात, ऊँच-नीच, ईर्ष्या-द्वेष आदि की संकीर्ण सोच से ऊपर उठने को कह रहे हैं।
(ग) सड़ी-गली प्रथाओं का त्याग करके ही युवाओं की सोच को नई दिशा में ले जाया जा सकता है और धरती पर स्वर्ग का निर्माण हो सकता है।

लिखित

1. (क) हमें पूरी दुनिया को एक दृष्टि से (सबको समान) देखना चाहिए।
   (ख) जग जाति, धर्म और रंग आदि के भेदभाव से ग्रस्त हैं।
   (ग) कवि ने सड़ी-गली प्रथाओं को मृत्यु के समान बताया है।

2. (क) कवि का बच्चों व नवयुवकों से आग्रह है कि वे मलय पर्वत से आने वाली हवा के समान शीतल बनें अर्थात शांति का प्रसार करें। इसी से वे संसार का वर्तमान व भविष्य सँवार सकते हैं।
   (ख) यहाँ 'नए हाथ' का अर्थ युवा शक्ति है। युवा शक्ति अपनी नई सोच, नई तकनीक से पूरे विश्व का भाग्य बदल सकती है।

3. 1. (क), 2. (ख), 3. (घ), 4. (ख)

4. इन पंक्तियों में कवि बच्चों (युवा पीढ़ी) को प्रेरित कर रहे हैं। वे बच्चों से कह रहे हैं कि तुम मूल रूप से (बिलकुल) नए बनो। अपने स्वभाव से जियो और निर्णय लो। तुम इतने आधुनिक बनो जितनी बनाने की कला है अर्थात नए-से-नए आधुनिक-से-आधुनिक बनो।

भाषा-बोध

1. (*i*) कुमार्ग, (*ii*) कुकर्म, (*iii*) कुख्यात, (*iv*) कुचक्र, (*v*) कुसमय, (*vi*) कुतर्क

2. दुनिया–संसार, जग; पवन–हवा, वायु; धरा–धरती, भूमि; सूरज–सूर्य, भास्कर; चाँद–चंद्रमा, राकेश

3. (*i*) दृष्टि, (*ii*) द्वेष, (*iii*) ज्वालाओं, (*iv*) स्वयं

4. ऋ – दृष्टि, वृष्टि, सृजन
   र – सारी, धरा, रंग
   र् – धर्म, वर्तमान, आकर्षण
   ्र – प्रवाह, प्रतिपल

रचनात्मक कार्य

1. **संकेत :** ऊँची शिक्षा प्राप्त करके, वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाकर, नई तकनीक का विकास करके, अनपढ़ को शिक्षित करके, किसी भी प्रकार का भेदभाव न करके, शांति रखकर।
2. बच्चे अपने मौलिक विचार / अपनी सोच प्रकट करें।
3. बच्चे अपनी कल्पना से बताएँ।
4. **संकेत :** शिक्षा, सफ़ाई, स्वास्थ्य, खेलकूद, मनोरंजन, असहाय व निर्बल की सहायता।

6. अस्पृश्यता : एक अभिशाप

मौखिक

(क) गांधी जी ने अस्पृश्यता-निवारण का धर्म-संदेश लाखों-करोड़ों के हृदय तक पहुँचाने के लिए सारे भारत का प्रवास 7 नवंबर, 1933 से 31 जुलाई, 1934 तक किया था।

(ख) शास्त्रार्थ करने।

(ग) महादेव भाई पंडितजन को समझाना चाह रहे थे कि दस मील तय करके गांधी जी अभी आ रहे हैं और वे बहुत थक गए हैं, वे लोग शाम को चार बजे आकर मिलें तो अच्छा होगा।

(घ) वृद्ध पंडित ने कहा–''महात्मन्, परास्त आप नहीं हुए, परास्त तो हम हुए और मिथ्या ज्ञान की मार आज हम अपने सिर पर से उतारकर आपके चरणों में रख देते हैं।''

लिखित

1. (क) भारतवासियों ने गांधी जी से यह संदेश ग्रहण किया कि अस्पृश्यता हिंदू धर्म पर कलंक है। इसके रहते हिंदू धर्म का नाश निश्चित है।
   (ख) इस पाठ में लेखक ने उड़ीसा के प्रसंग दिए हैं। वहाँ गांधी जी पैदल-यात्रा कर रहे थे।
   (ग) पंडितजन यह प्रमाणित करने को उत्सुक थे कि अस्पृश्यता अधर्म नहीं, बल्कि धर्म है।
   (घ) उन्होंने एक-दो सभाओं मतें शास्त्रीय आधार पर गांधी जी के विचार का समर्थन किया।
2. (क) उस किसान ने लेखक से कहा कि वह स्वयं ब्राह्मण था लेकिन किसी को अस्पृश्य नहीं मानता। उसके अनुसार गांधी जी धर्म की बात बोलते थे। वह अपना सौभाग्य समझता था कि गांधी जी ने उसके गाँव में विश्राम किया था। बाद में यही बात वह अपने बच्चों को बताना चाहता था।
   (ख) उड़ीसा की पैदल-यात्रा के दौरान गांधी जी की प्रार्थना-सभाओं में हज़ारों लोग आते थे। वे बड़ी श्रद्धा से गांधी जी के चरणों में ताँबे के टुकड़े, पैसे, अधेले, पाई आदि रख जाते थे। कई बार कोई बहुत ही कमज़ोर और बहुत ही गरीब व्यक्ति भी दान दे जाता था। ऐसे ही दृश्यों को लेखक ने वर्णनातीत बताया है।
   (ग) पंडितजन बापू की विनम्रता से बेहद प्रभावित हुए थे। गांधी जी ने उनसे बिना तर्क-वितर्क किए अपनी हार मान ली थी। उन्होंने हार तो मान ली थी लेकिन अपनी सोच पर दृढ़ थे इसलिए पंडितजन उन पर हैरान थे।
   (घ) जब पंडितजन चलने लगे तो गांधी जी ने उनसे हरिजनों के लिए पैसे माँगे पंडितजन ने पैसे दिए भी। फिर वे (गांधी जी) उनसे अपने साथ यात्रा पर चलने का अनुरोध करने लगे। गांधी जी चाहते थे कि कोई ब्राह्मण ही अस्पृश्ता के विरुद्ध बोले।
3. 1. (घ), 2. (ग), 3. (क), 4. (ग)
4. उस समय अनगिनत लोग अस्पृश्यता के पक्ष में थे। वे अनेक प्रकार के प्रमाण देते थे और तर्क-वितर्क करते थे। वे अस्पृश्यता को अधर्म नहीं, बल्कि धर्म समझते थे। ऐसे लोगों को हृदय गांधी जी ने बदल दिया। वे (गांधी जी) ऐसे लोगों का समझाने में सफल रहे कि सबमें परमात्मा का ही रूप है। न कोई छोटा है न बड़ा, न ऊँच न नीच।
5. **संकेत :** भारत के अधिकतर भाग से अस्पृश्यता समाप्त, फिर भी किन्हीं दूर-दराज़ के गाँवों में मौजूद हो सकती है, इसके उन्मूलन के लिए कानून बनाया जा चुका है, बच्चे जागरूकता फैलाकर तथा किसी प्रकार के भेदभाव को न मानकर अपना सर्वश्रेष्ठ सहयोग दे सकते हैं। (बच्चे अपने निजी विचार भी लिखें।)

भाषा-बोध

1. (क) क्या पंडितजन ने श्रद्धानुसार सेवा की?
   पंडितजन ने श्रद्धानुसार सेवा नहीं की।
   (ख) क्या महादेव भाई ने मुलाकात करवाई?
   महादेव भाई ने मुलाकात नहीं करवाई?
2. (ख) सरल वाक्य, (ग) मिश्र वाक्य, (घ) मिश्र वाक्य, (ङ) मिश्र वाक्य, (च) संयुक्त वाक्य
3. अर्थ–आर्थिक, धर्म–धार्मिक, नीति–नैतिक, समाज–सामाजिक, लोक–लौकिक
4. (क) प्रतिबिंब, (ख) अस्पृश्यता, (ग) प्रायश्चित्त, (घ) ब्राह्मण, (ङ) शास्त्रार्थ

रचनात्मक कार्य

1. **संकेत :** अस्पृश्यता मानवता पर कलंक, परमात्मा ने किसी को छोटा-बड़ा या ऊँच-नीच नहीं बनाया, उच्च कुल में पैदा हुआ यदि कोई व्यक्ति बुरे कार्य करे तो क्या उसे ऊँचा माना जाएगा, यदि कोई पिछड़ी जाति का व्यक्ति नेक व भले कार्य करे तो क्या उसे छोटा माना जाएगा, हर व्यक्ति अपने कार्य से छोटा या बड़ा होता है, इसी बात को समझते हुए भारत सरकार ने भी छुआ-छूत पर रोक लगा रखी है, उल्लंघन करने वाले को कड़ी सज़ा मिलती है।
2. **संकेत : ईश्वरचंद्र विद्यासागर**–ब्राह्मण परिवार में पैदा हुए। शिक्षा को बढ़ावा दिया, छुआ-छूत का विरोध किया।

   डॉ० अंबेडकर–निर्धन दलित परिवार में जन्म हुआ, कानून की शिक्षा प्राप्त की, छुआ-छूत का डटकर विरोध किया, मंत्री बने, दलितों की भलाई के लिए कानून बनाए, भारत के संविधान-निर्माता हैं।

   संत कबीर–एक गरीब जुलाहा परिवार में पालन-पोषण हुआ, जात-पात का विरोध किया, हिंदू धर्म में किए जाने वाले कई पाखंडों का विरोध किया, सबको एक समान मानने की शिक्षा दी।
3. **संकेत :** छुआ-छूत का विरोध, महिलाओं में परदा प्रथा का विरोध, ज़मींदारी प्रथा का विरोध, भूमिहीन किसानों के शोषण का विरोध।
4. **संकेत :** महादेव भाई गांधी जी के निजी सहायक, गांधी जी के साथ रहते थे, अथक परिश्रम करते थे, उनके बिना गांधी जी स्वयं को अधूरा मानते थे।
5. अस्पृश्यता कानूनी अपराध, छुआ-छूत मानने वाले को जेल भेजने का प्रावधान, सिर पर मैला ढोलने की प्रथा पर रोक, मजबूर करने वालों को सज़ा, दलितों को शिक्षा व नौकरी की विशेष सुविधाएँ।
6. बच्चों को कई प्रकार के पुराने सिक्के नेट की सहायता से दिखा सकते हैं।

7. संकल्प

मौखिक

(क) यासुकी-चान को पोलियो था, इसलिए वह न तो किसी पेड़ पर चढ़ पाता था और न किसी पेड़ को निजी संपत्ति मानता था।

(ख) कि तोत्तो-चान ने उन्हें अपने पेड़ पर आमंत्रित किया है।

(ग) जब यासुकी-चान सीढ़ी से पेड़ पर नहीं चढ़ पाए तब तोत्तो-चान की रुलाई छूटने को हुई। उसने चाहा था कि यासुकी-चान को अपने पेड़ पर आमंत्रित कर तमाम नई-नई चीज़ें दिखाए।

(घ) तोत्तो-चान सोचने लगी कि सूमो पहलवान घर में रखे किसी डिब्बे में कैसे समा पाएँगे?

लिखित

1. (क) तोत्तो-चान का पेड़ मैदान के बाहरी हिस्से में कुहोन्बुत्सु जाने वाली सड़क के पास था।

   (ख) इसके लिए पूरी शिष्टता से पूछना पड़ता था–माफ़ कीजिए, क्या मैं अंदर आ जाऊँ?

   (ग) तोत्तो-चान की हार्दिक इच्छा थी कि यासुकी-चान उसके पेड़ पर चढ़े।

   (घ) क्योंकि यासुकी-चान के हाथ-पैर बेहद कमज़ोर थे।
2. (क) तोत्तो-चान का पेड़ एक सड़क के पास था। यह एक विशाल पेड़ था, जिसका तना कुछ चिकना था। इस पर पैर आसानी से नहीं जमते थे। ज़मीन से लगभग छह फुट की ऊँचाई पर एक द्विशाखा थी। यहाँ झूले जैसी आरामदेह जगह थी।

   (ख) तोत्तो-चान झूठ बोल रही थी। उसने माँ से कहा कि वह यासुकी-चान के घर डेनेनचोफु जा रही है, जबकि वह स्कूल जा रही थी इसलिए उसने माँ की आँखों में नहीं झाँका। झूठ बोलने वालों में आँख मिलाने की हिम्मत नहीं होती। आँख मिलाने से झूठ पकड़े जाने का डर रहता है।

   (ग) यासुकी-चान ने तोत्तो-चान को बताया कि अमेरीका में एक अजीब चीज़ होती है-टेलीविज़न। उसने बताया कि टेलीविज़न एक डिब्बे जैसा होता है। उसमें घर बैठे-बैठे ही सूमो-कुश्ती देखी जा सकती है। तोत्तो-चान के लिए यह जानकारी नई और आश्चर्य में डालने वाली थी।

   (घ) यासुकी-चान पोलियोग्रस्थ था। उसके हाथ-पैर बेहद कमज़ोर थे। तोत्तो-चान ने उसे पेड़ पर चढ़ने में अनेक प्रकार से मदद की। वह उसके लिए एक सीढ़ी लाई लेकिन यासुकी-चान उस पर चढ़ न पाया। फिर वह उसके लिए एक तिपाई-सीढ़ी घसीटकर लाई। यासुकी-चान सीढ़ी पर तो चढ़ गया लेकिन द्विशाखा पर न चढ़ सका। तब पहले से द्विशाखा पर पहुँच चुकी तोत्तो ने अपनी पूरी ताकत लगाकर उसे ऊपर खींचा।
3. 1. (क), 2. (क), 3. (ख)
4. यासुकी-चान पोलियोग्रस्त बच्चा था। तोत्तो-चान वैसे तो यासुकी से एक साल छोटी थी लेकिन उसकी हार्दिक इच्छा थी कि यासुकी उसके पेड़ पर चढ़े।

बहुत अधिक कोशिशों के बाद यासुकी पेड़ पर चढ़ सका। पेड़ पर उन्होंने बाल-सुलभ ढेरों बातें की। दोनों बहुत उत्सुक और प्रसन्न थे। उन्हें देखकर पेड़ भी प्रसन्न थे। चारों ओर प्रसन्नता का वातावरण था इसलिए लेखक ने लिखा है–पेड़ मानो गीत गा रहे थे।

5. **संकेत :** यासुकी-चान समझ गया होगा कि पेड़ पर चढ़ना उसके कितना मुश्किल कार्य है, रोज़-रोज़ सहायता ली भी नहीं जा सकती, सभी सहायता करने वाले तोत्तो-चान की तरह समर्पित नहीं होते, फिर पेड़ पर चढ़ने का अनुभव उसने प्राप्त भी कर लिया था, ऊपर से टेलीविज़न का आविष्कार हो चुका था, टेलीविज़न पर कई प्रकार के रोमांच घर बैठे-बैठे देखे जा सकते थे।

संकेत : जिस चीज़ को हम बार-बार प्रयोग करने लगें और दूसरा कोई उसे प्रयोग न करे तो वह अपनी लगने लग जाती है, मान लो आपको कक्षा में कोई सीट अलॉट नहीं हुई है लेकिन आप रोज़ एक ही सीट पर बैठते हैं, दूसरा कोई उस पर बैठता भी नहीं है (भले ही यह आपको अलाट नहीं है), उस हालत में यह सीट आपको अपनी लगेगी। इसी प्रकार तोगोए में हरेक बच्चा----------

भाषा-बोध

1. (क) (*i*) मेरी किताबें **यहाँ** रखी हैं।
   (*ii*) **इधर-उधर** मत घूमो।
   (*iii*) **दाएँ-बाएँ** देखकर चलो।

   (ख) (*i*) घबराना, (*ii*) धकियाना, (*iii*) फ़िल्माना, (*iv*) हड़बड़ाना, (*v*) अपनाना, (*vi*) गर्माना

2. (*i*) वाह! खाने का तो मज़ा आ गया।
   (*ii*) छि:-छि:! कितनी गंदगी है यहाँ।
   (*iii*) अरे! आप अभी तक गए नहीं?

3. (*i*) अचानक, (*ii*) इधर, (*iii*) खुश, (*iv*) गप्प, (*v*) छाया, (*vi*) टेलीविज़न, (*vii*) पेड़, (*viii*) बेहद, (*ix*) सीढ़ी

4. (*i*) बाहरी, (*ii*) निजी, (*iii*) डाँटते, (*iv*) कमज़ोर, (*v*) पहली, (*vi*) लुभावनी

रचनात्मक कार्य

1. **संकेत :** शरीर का कोई अंग विशेष कार्य नहीं करता, उस अंग का कार्य शरीर के दूसरे अंग से लेना पड़ता है, ऐसा करना कष्टदायी होता है, जैसे हाथों का कार्य पैरों से लेना (पैरों से लिखना या कढ़ाई करना), पैरों का कार्य हाथों से लेना (हाथों के बल या बैसाखियों के सहारे चलना) आदि, नेत्रहीन बच्चों को छूकर या सुनकर ही चीज़ों को जानना-समझना होता है आदि-आदि।

2. घटना बोलने-बताने हेतु बच्चों को प्रोत्साहित करें। कोई घटना स्वयं भी सुना सकते हैं।

3. **संकेत :** जब हौंसले बुलंद हों तो कुछ भी बाधक नहीं, विकलांगता? धन की कमी, मार्ग-दर्शन न मिलना आदि अनेक बाधाएँ हो सकती हैं, दृढ़ निश्चय वालों के रास्ते में कोई बाधा स्थापित रह नहीं सकती, अनेक विकलांगजनों ने विश्व में अपना लोहा मनवाया, सरकार तथा अनेक समाज-सेवी संस्थाएँ भी सहायता को तत्पर।

4. **संकेत :** जापान से संबंधित; अन्य नाम–मिशी, मित्सी, ओकाया, शूनो, पोषी, मायरा, निकिता, यूसेप्पे, ओवन्नी, पियात्रो, नताली, लियूज़ी आदि।

5. **संकेत : रवींद्र जैन**–महान भारतीय गीतकार, संगीतकार व गायक, नेत्रहीन थे लेकिन अपनी योग्यता का लोहा मनवाया।

   सुधा रामचंद्रन–भारतीय की सुप्रसिद्ध नृत्यांगना, दुर्घटना के कारण एक टाँग काटनी पड़ी, लेकिन नृत्य नहीं छोड़ा, एक प्राकृतिक व एक कृत्रिम टाँग के सहारे देश-विदेश में नृत्य के अनेक कार्यक्रम प्रस्तुत किए।

   हेलेन केलर–नेत्रहीन व गूँगी बालिका, अपने परिश्रम के दम पर उच्च शिक्षा प्राप्त की व योग्यता वक्ता बनीं।

6. प्रस्तुत पंक्ति को ही थोड़ा और विस्तार दें।

8. अक्षरों की कहानी

मौखिक

(क) कि यदि आदमी अक्षरों को न जानता तो आज इस दुनिया का क्या हाल होता।

(ख) किसी भी कौम या देश का इतिहास तब से शुरू होता है जब से आदमी के लिखे हुए लेख मिलने लग जाते हैं। अक्षरों की खोज करने के बाद ही मनुष्य अपने विचारों को लिखकर बताने लगा और पिछले छह हज़ार सालों में मानव-जाति का तेज़ी से विकास हुआ।

(ग) हम सबको अक्षरों की कहानी मालूम होनी चाहिए। आज जिन अक्षरों को हम पढ़ते या लिखते हैं वे कब बनाए गए, कहाँ बने और किसने बनाए, यह जानना ज़रूरी है।

लिखित

1. (क) वे सोचते थे कि अक्षरों की खोज ईश्वर ने की है।
   (ख) आज हम जानते हैं कि अक्षरों की खोज परमात्मा ने नहीं बल्कि स्वयं मनुष्य ने की है।
   (ग) इतिहास शुरू होने से पहले के काल को 'प्रागैतिहासिक काल' कहा जाता है।

2. (क) पृथ्वी लगभग पाँच अरब साल पुरानी है। दो-तीन अरब साल तक यहाँ कोई जीव-जंतु नहीं थे। फिर करोड़ों साल तक केवल जानवर और वनस्पतियाँ रही। लगभग पाँच लाख साल पहले मानव ने जन्म लिया और धीरे-धीरे उसका विकास हुआ।

(ख) सबसे पहले मानव ने चित्रों के माध्यम से अपने भाव व्यक्त किए। इन चित्रों में सुधार करने पर भाव-संकेतों ने जन्म लिया। जैसे एक छोटे वृत्त के चारों ओर किरणों की प्रतीक रेखाएँ खींचने पर वह सूर्य का चित्र बन जाता था।

(ग) यदि अक्षरों की खोज न हुई होती तो आज हम इतिहास को न जान पाते। न तो हमें यह पता चलता कि कुछ हज़ार साल पहले मानव किस प्रकार रहता था और न ही यह पता चलता कि पहले कौन-कौन राजा हुए आदि।

3. 1. (क), 2. (क), 3. (ख)

4. यह कथन सौ प्रतिशत सही है। अक्षरों की खोज से पहले हर चीज़ अनुमान पर आधारित है। अक्षरों की खोज के बाद से मानव अपने विचार और अपने हिसाब-किताब को लिखकर रखने लगा। अक्षरों की शुरुआत के बाद से ही इतिहास आरंभ हुआ। किसी जाति या देश का इतिहास तब से शुरू हुआ माना जाता है जब से मनुष्य के लिखे हुए लेख मिलने लग जाते हैं।

5. **संकेत :** शरीर के अंगों की सहायता से, जैसे–चलने के लिए कहने हेतु कोई दूसरे का हाथ थामकर चलने लगा होगा, संकेतों की भाषा में और चीज़ों की ओर इशारा करके, जैसे–भूख लगने पर किसी बच्चे ने पेड़ पर लटके आम की ओर इशारा किया होगा या पेट को थपथपाया होगा, आदि।

भाषा-बोध

1.

	मुख्य क्रिया	सहायक क्रिया
(ख)	छपते	रहते
(ग)	करता	रहा
(घ)	बन	गए
(ङ)	मिलने	लगे

2. (*i*) **पचास**–हमारे सदन में पचास विद्यार्थी हैं।
(*ii*) **थोड़े-से**–थोड़े-से चावल मुझे भी दे दो।
(*iii*) **कुछ**–कुछ लोग और आएँ तो एक ड्रम उठाएँ।
(*iv*) **लाखों**–तिरुपति मंदिर में हर रोज़ लाखों श्रद्धालु पहुँचते हैं।

3. (*i*) दुनिया, (*ii*) तादाद, (*iii*) इस्तेमाल, (*iv*) औज़ार, (*v*) ज़रिए, (*vi*) काफ़ी

4. (ख) **ईश्वर**– ई + श् + व् + अ + र् + अ
(ग) **कल्पना**– क् + अ + ल् + प् + अ + न् + आ
(घ) **मूल्य**– म् + ऊ + ल् + य् + अ
(ङ) **मनुष्य**– म् + अ + न् + उ + ष् + य् + अ

रचनात्मक कार्य

1. **संकेत :** मराठी, नेपाली, संस्कृत।
2. **संकेत :** भारतेंदु हरिश्चंद्र, महावीर प्रसाद द्विवेदी, महादेवी वर्मा, सुमित्रानंदन पंत, सुभद्राकुमारी चौहान; गुणाकर मूले आदि।
3. स्वयं कीजिए।
4. ई-बुक नेट पर उपलब्ध, असंख्य विषयों पर, इन्हें पढ़ने के लिए भुगतान करना होता है।
5. ओ–ओ, औ–औ, ख–ख, छ–छ, झ–झ, द्य–ध, भ–भ, ल–ल, श–श आदि बदलाव की जानकारी बोर्ड पर लिखकर दें। संयुक्त व्यंजनों के पुराने स्वरूप भी दर्शा सकते हैं; जैसे क्क–क्क, न्न–न्न।
6. विद्यार्थी स्वयं अंग्रेज़ी, पंजाबी या उर्दू आदि भाषा में लिखकर दिखाएँ।
7. नेट पर दिखाने का प्रयत्न करें या बच्चे स्वयं देखें, इसके लिए उन्हें प्रोत्साहित करें।

9. प्रभु के गीत

मौखिक

(क) श्रीकृष्ण की भक्ति मिलने के कारण।
(ख) श्रीकृष्ण की भक्ति में लीन होकर भजन गा रही हैं।
(ग) परमात्मा मनुष्य के अंतर्मन में समाया है।
(घ) मनुष्य परमात्मा की खोज में बाहर भटकता रहता है जबकि परमात्मा तो मनुष्य के मन में बसे हैं। जब तक मनुष्य बाहरी आडंबरों को भूलकर अपने मन में सच्ची भक्ति से झाँककर नहीं देखेगा तब तक वह भ्रम में भटकता रहेगा।
(ङ) अपने मन के भीतर।

लिखित

1. (क) सतगुरु की कृपा से मीरा को परमात्मा रूपी अमूल्य उपहार मिला है। इस उपहार (परमात्मा) की विशेषताएँ हैं कि इसे कोई चोर चुरा नहीं सकता। यह समाप्त न होने वाली पूँजी है जो दिन-प्रतिदिन बढ़ती ही जाती है।

(ख) खेवटिया का अर्थ होता है – नाविक। यहाँ मीरा ने सतगुरु की तुलना नाविक से की है। जिस प्रकार नाविक हमारी नाव को नदी की

धार पार करवाता है, उसी प्रकार सतगुरु हमारे जीवन की नाव को पार उतारता है अर्थात परमात्मा से मेल करवाता है।

(ग) गुरु जी ने ज्ञान की यह बात बताई है कि जैसा संसार तुम बाहर देखते हो, वैसा ही संसार तुम्हारे भीतर भी है। भीतर-बाहर सब एक-सा है लेकिन जब तक तुम पूरी तरह समर्पण नहीं कर देते, तब तक संदेह समाप्त नहीं हो सकता।

(घ) गुरुनानक देव जी कहते हैं कि जिस प्रकार फूल में खुशबू रची हुई है और जिस प्रकार शीशे में परछाई स्थापित है, उसी प्रकार परमात्मा हमारे भीतर रचे हुए हैं, स्थापित हैं।

2. 1. (क), 2. (ग), 3. (घ)

3. (क) यहाँ मीरा प्रभु का गुणगान करते हुए उसकी विशेषताएँ गिनवा रही हैं। वे कहती हैं कि परमात्मा ऐसी पूँजी के समान है, जिसे कोई चोर चुरा नहीं सकता। यह कभी समाप्त न होने वाली पूँजी है। यह घटने की बजाए दिन-प्रतिदिन बढ़ती ही जाती है।

(ख) यह गुरुनानक देव जी द्वारा गाया पद है। वे भी अपने ढंग से, अपने शब्दों में परमात्मा की विशेषताएँ बता रहे हैं। उनके अनुसार परमात्मा कण-कण में हैं, यह मोह-रहित है। यह मनुष्य के भीतर ही विराजमान है, कहीं बाहर नहीं।

4. **संकेत**–पूरा समर्पण; सतगुरु की विशेष महिमा बताई; सतगुरु की तुलना नाविक से; परमात्मा की तुलना उपहार से, पूँजी से।

संकेत–जो साधु-संन्यासी हो जाते हैं, जंगल में धूनि रमाते हैं या पहाड़ों पर परमात्मा की खोज करते हैं या कई अन्य प्रकार के आडंबर करते हैं।

भाषा-बोध

1. (*i*) कृपा, (*ii*) तेरे / तुम्हारे, (*iii*) लेता, (*iv*) बसना, (*v*) यश, (*vi*) में, (*vii*) जाएँ, (*viii*) बसे, (*ix*) एक, (*x*) जानो

2. धन – धन का जीवन में बहुत महत्त्व है।
सत्य – महात्मा गांधी सत्य बोलते थे।
सुगंध – फूलों की सुगंध से पूरी बगिया महक रही है।
गुरु – सच्चे गुरु बिना ज्ञान प्राप्त नहीं होता।

3. (क) पूँजी, (ख) सतगुरु, (ग) प्रभु, (घ) पुष्प, (ङ) ज्ञान

रचनात्मक कार्य

1. **संकेत :** 1503 ई० में राजस्थान के मारवाड़ ज़िले में जन्म, 1516 ई० में चित्तौड़ के महाराजा के बड़े पुत्र भोजराज से विवाह, मीरा को बचपन से ही भक्ति के संस्कार अपने दादा जी से मिले, विवाह के कुछ ही वर्ष बाद पति का निधन, खेल-ही-खेल में भगवान श्रीकृष्ण को अपना दूल्हा मान लिया और उनकी भक्ति में डूब गई।

2. स्वयं कीजिए।

3. **रसखान का एक पद :** मानुष हौं तो वही रसखानि बसौं गोकुल गाँव के ग्वारन। जो पसु हौं तो कहा बस मेरो चरौं नित नंद की धेनु मँझारन।।

अर्थात: यदि मैं मनुष्य के रूप में पुन: जन्म पाऊँ तो ब्रज और गोकुल गाँव के ग्वालों के बीच ही रहूँ। और यदि मैं पशु के रूप में जन्म लूँ तो सदा नंद की गायों के बीच चरूँ।

4. सिख धर्म के दस गुरु हैं–
(*i*) गुरु नानक देव जी, (*ii*) गुरु अंगद देव जी, (*iii*) गुरु अमरदास जी, (*iv*) गुरु रामदास जी, (*v*) गुरु अर्जनदेव जी, (*vi*) गुरु हरगोबिंद जी (*vii*) गुरु हर राय जी, (*viii*) गुरु हरकिशन जी, (*ix*) गुरु तेग बहादुर जी, (*x*) गुरु गोबिंद सिंह जी (*xi*) गुरु ग्रंथ साहिब जी
गुरु ग्रंथ साहिब जी को सिखों का अंतिम गुरु माना जाता है।

5. स्वयं कीजिए।

6. **संकेत :** मंदिर, मसजिद, गुरुद्वारा, चर्च, मठ आश्रम, जंगल, पहाड़ आदि। कोई पूजा करता है, कोई नमाज़ पढ़ता है, कोई अरदास करता है, कोई प्रार्थना करता है, कोई ध्यान करता है, कोई दान-पुण्य करता है; आदि।

10. चिड़िया की बच्ची

मौखिक

(क) माधवदास ने संगमरमर की कोठी बनवाई है और उसके सामने बगीचा भी। उनको कला से बहुत प्रेम है। धन की कमी नहीं है, बुरी आदतों से दूर हैं। फूल-पौधे, फव्वारें अर्थात प्रकृति से उन्हें प्रेम है। मित्रों से विनोद-चर्चा करते हैं, नहीं तो हुक्का पीते हैं।

(ख) माधवदास ने चिड़िया को अपनी सुंदर कोठी, बाग-बगीचा, पेड़-पौधे, सोने-चाँदी, मोती आदि के प्रलोभन दिए।

(ग) क्योंकि वह बिलकुल अकेला रहता था।

(घ) सूरज की धूप, हवा और फूलों से बात करने के सुख को।

लिखित

1. (क) चिड़िया को देखकर माधवदास का मन प्रसन्न हो गया था इसलिए वह उसे बार-बार वहीं रूकने को कहता रहा।

(ख) चिड़िया ने बताया कि उसकी दो बहनें व एक भाई है।

(ग) चिड़िया को रात में रास्ता नहीं सूझता था इसलिए वह अँधेरा होने से पहले ही अपनी माँ के पास पहुँच जाना चाहती थी।

(घ) उसने नौकर को इशारा कर दिया था कि वह चिड़िया को पकड़ ले। उसे पकड़ने के लिए उसने चिड़िया को बातों में लगाए रखा।

2. (क) चिड़िया बहुत सुंदर और आकर्षक थी। उसकी गरदन लाल थी और गुलाबी होते-होते किनारों पर ज़रा-ज़रा नीली पड़ गई थी। पंख ऊपर से चमकदार काले रंग के थे। उसका सिर छोटा-सा और शरीर पर विचित्र चित्रकारी थी।

(ख) यहाँ 'सत्ता' का अर्थ है–अमीरी। उसके अनेक बँगले थे, कोठियाँ थीं, नौकर-चाकर थे। उसके पास अपार दौलत थी लेकिन चिड़िया को इन बातों से कुछ लेना-देना नहीं था।

(ग) सेठ माधवदास को अपनी अमीरी, अपनी दौलत का बहुत अभिमान था। उसकी नज़र में तो दुनिया की सबसे कीमती चीज़ उसके पास थी लेकिन चिड़िया उसकी अमीरी, उसकी दौलत को कोई महत्त्व नहीं देती। चिड़िया के लिए तो सूरज की धूप, हवा से खेलना और फूलों से बात करना अधिक महत्त्वपूर्ण था इसलिए माधवदास चिड़िया को बार-बार 'भोली', 'नादान' जैसे विशेषणों से पुकारता है।

3. 1. (क), 2. (ग), 3. (ख), 4. (घ)

4. सेठ माधवदास बार-बार चिड़िया को बहका रहा था। उसके नौकर को चिड़िया पकड़ने का इशारा भी कर दिया था। नौकर के हाथों का स्पर्धा होने पर चिड़िया चिचियाई। वह समझ गई कि उसे बंदी बनाने की कोशिश की जा रही है। वह डरकर वहाँ से उड़ी तो सीधे माँ के पास पहुँची और उसकी छाती से चिपट गई। माँ की छाती (गोद) उसे दुनिया की सबसे सुरक्षित जगह लगी।

5. **संकेत :** यदि चिड़िया ने सेठ की बात मान ली होती तो उसे सदा के लिए पिंजरे में बंद कर दिया जाता; वह तरसती निगाहों से खुले आकाश को देखती, मगर उड़ न पाती; वह बगिया में फूलों को देखती लेकिन उसकी खुशबू न ले पाती; वह अपनी माँ, बहनों और भाई से बिछुड़ जाती; एक दिन उसी पिंजरे में उसकी मौत हो जाती।

भाषा-बोध

1. (क) (*i*) करना, (*ii*) अरी, (*iii*) तूने, (*iv*) क्षणभर, (*v*) यत्न, (*vi*) उजाला

(ख) (*i*) निश्चिंत, (*ii*) प्रसन्न, (*iii*) जाति, (*iv*) भाग्य, (*v*) कालीन, (*vi*) वस्तु, (*vii*) जीवन, (*viii*) सुगंध, (*ix*) थोड़ा, (*x*) बगिया

2. (क) मेरी इच्छा है कि तुम मेरा मन बहलाओ।

(ख) मेरी इच्छा है कि तुम्हारे लिए सोने का पिंजरा बनावाऊ।

(ग) मेरी इच्छा है कि तुम घोंसलें में रहना छोड़ दो।

(घ) मेरी इच्छा है कि तुम्हें सोने से मढ़ दूं।

(ङ) मेरी इच्छा है कि मैं अंधेरा होने से पहले उड़ जाऊँ।

3. (क) अभि, (ख) प्र, (ग) बे, (घ) अ, (ङ) महा

4. (क) इत, (ख) ई, (ग) दार, (घ) ता, (ङ) आ

रचनात्मक कार्य

1. **पराधीन सपने हूँ सुख नाहिं : संकेत :** गुलामी में आत्मा कर जाती है; दूसरों की आज्ञानुसार ही सब कार्य करने होते हैं; मनुष्य का विकास रूक जाता है; गुण धीरे-धीरे समाप्त होने लगते हैं; मनुष्य कठपुतली की भाँति व्यवहार करने लगता है; आज़ाद प्राणी ही जीवन का वास्तविक सुख उठाता है; अपने गुणों का, अपनी कलाओं का मनचाहा विकास कर पाता है; आज़ाद प्राणी ही प्रकृति के सब सुखों का आनंद ले पाता है।

2. **संकेत :** गरमी की शाम; गरमी में हलकापन; आसमान नीला, सफ़ेद, भूरा, गुलाबी; ढलते सूर्य का सौंदर्य; घर लौटते पक्षियों की उड़ान; बीच-बीच में आता ठंडी हवा का झोंका।

3. अधिकतम बच्चों को अपने विचार प्रकट करने का अवसर प्रदान करें।

4. टाटा, बिड़ला, अंबानी, अज़ीम प्रेम जी, राहुल बजाज, सुनील मुंजाल, जिंदल बंधु आदि। ऐसे लोग दिन में 18-18 घंटे काम करते हैं; रत्न टाटा जैसे उद्योगपति अथक परिश्रम करते हुए अपनी नींद तक हवाई उड़ानों में पूरी करते हैं। जब आम आदमी आराम कर रहा होता है, वे अपने काम में जुटे होते हैं।

11. बाढ़ का बेटा

मौखिक

(क) बिसेसर न केवल जुझारू है बल्कि स्वाभिमानी भी है। उसे अपनी मेहनत, अपने कर्म और अपनी गुर पर पूरा विश्वास है।

(ख) क्योंकि पहले जो बाढ़ आती थी उसमें थोड़ा बहुत नुकसान होता था परन्तु अबकी बार बाढ़ जंगल के

बाघ की तरह आई थी अर्थात जिस प्रकार बाघ अपने शिकार को आधा जिंदा आधा मरा नहीं छोड़ता पूरा खत्म करके ही शांत होता है बाढ़ भी इसी तरह की थी जिसने सब कुछ पानी में डुबो दिया था।

(ग) गाँव में नूनफर कोई ऐसी जगह होगी जो बहुत ऊँची चबूतरे की तरह होगी। जिस पर सभी गाँव के लोग अपनी जान बचाने के लिए पहुँचे।

(घ) बिसेसर की आँखें तब छलछला आई जब खेत में बोने को बीज के पैसे नहीं थे तब उसकी बीबी ने अपनी हँसुली उतारकर दे दी थी और उसे अपनी बीबी का गहना बंधक रखना पड़ रहा था।

लिखित

1. (क) सुकिया ने बताया कि बाढ़ आ रही है।
   (ख) प्रयाग सहनी बिसेसर के दादा जी थे।
   (ग) क्योंकि बिसेसर रिलीफ़ को भीख के समान मानता था।
   (घ) समय पर बढ़िया फ़सल होने से बाढ़ की क्षतिपूर्ति हो सकती है।

2. (क) बिसेसर के दादा जी समझदार और अनुभवी व्यक्ति थे। उन्होंने खेल-ही-खेल में बिसेसर को जाल की मरम्मत करना, नया जाल बनाना सिखला दिया था। उन्होंने उसे जाल के धागे, जाल को सँभालने और फेंकने के बारे में भी सिखाया।
   (ख) बाढ़ आने पर गाँव में पानी-ही-पानी हो गया। हर घर में पानी घुस गया था। दूर से देखने पर ये घर टापू के समान नज़र आ रहे थे। लोग अपनी जान बचाने को अपने जानवरों सहित भागते नज़र आए।
   (ग) कहानी पढ़ने पर बसेसर की निराली ही छवि बनती है। वह स्वाभिमानी है, मेहनती है, ईश्वर पर विश्वास रखने वाला है। वह रिलीफ़ को भीख के समान मानता है। किसी के आगे हाथ फैलाने की बजाय पत्नी के गहने गिरवी रख देता है। वह लगन से काम करने में विश्वास रखता है और फल देना न देना परमात्मा पर छोड़ देता है।

3. 1. (ख), 2. (ख), 3. (घ), 4. (ख)

4. बिसेसर अलग ही हाड़-मांस का बना है। वह हार मानने वालों में नहीं है। बाढ़ में उसका लगभग सब-कुछ तबाह हो जाता है। वह घबराने की बजाए नए सिरे से काम में जुट जाता है। वह खेत में पहुँचकर मेड़ों को ठीक-ठाक करता है, खड्डो को भरता है। दिन-भर खेत में और रात-भर छोटे तालाब में मेहनत करता है इसलिए लेखक ने कहा है कि बिसेसर ने बाढ़ की चुनौती स्वीकार कर ली है।

5. **संकेत :** बाढ़ और बमबारी दोनों तबाही लाने वाली, दोनों में जन-धन की हानि, दोनों अव्यवस्था लाती हैं, सब-कुछ अस्त-व्यस्त हो जाता है, लोग जान-माल बचाने को भागते हैं, दोनों मानवता के लिए संकट लाती हैं, बाढ़ फिर भी बमबारी से बेहतर, बाढ़ के बाद भरपूर फ़सल की आस तो रहती है, बमबारी के बाद धुएँ और प्रदूषण का ज़हर पीना पड़ता है।

भाषा-बोध

1. (क) बाढ़ उसके लिए कोई नई चीज़ नहीं है।
   (ख) प्रयाग सहनी कहा करते, ''बेटे, बाढ़ से मत घबराना।''
   (ग) ''बाढ़ आ रही है।'' सुकिया ने कहा।
   (घ) उन्होंने बिसेसर को क्या-क्या नहीं सिखला दिया। जाल की मरम्मत करना, नया जाल बनाना।

2.

उपसर्ग	**शब्द**	**उपसर्ग**	**शब्द**
(*i*) उप	+ देश	(*ii*) दुर्	+ गत
(*iii*) अ	+ चल	(*iv*) अ	+ डिग
(*v*) प्र	+ लय	(*vi*) सम्	+ भव

3. (क) **देखते-ही-देखते** पानी घरों में घुस गया।
   (ख) बच्चा **उछलता-कूदता** मेले में जा पहुँचा।

4. (ग) बिसेसर को बचपन **की** याद आ **रही** है।
   (घ) गाँव से पानी निकलने में सात दिन लग **गए**।
   (ङ) पानी अब घरों में घुस **रहा है**।
   (च) गाँव **की कैसी** दुर्गत हो **गई** है।
   (छ) बाढ़ आती **है**, बाढ़ जाती **है**।

रचनात्मक कार्य

1. **संकेत :** 'आपदा-प्रबंधन' विषय की अध्यापिका को आमंत्रित कर विशेष जानकारी दिलवाएँ।

2. **संकेत :** सबसे बड़ी सहायता होगी जानकारी देना; लोगों को हैज़ा, त्वचा की बीमारियों आदि से बचने के उपाय बताएँ; जिन लोगों की देखभाल करने वाला कोई न हो उनकी देखभाल करें; नाक-मुँह पर पट्टी बाँधें; निर्माण कार्य में सहयोग करें।

3. स्वयं कीजिए।

4. **संकेत : भारतीय किसान :** भारतीय किसान का जीवन कठिनाइयों से भरा हुआ; कठिन परिश्रम करते हैं; प्राकृतिक आपदाओं (बाढ़, सूखा, फ़सलों की बीमारियाँ आदि) का सामना करते हैं; दिन-रात एक कर अनाज उगाते हैं; अनेक बार रूपए-पैसे की तंगी झेलते हैं।

5. कार्य-कलाप हेतु बच्चों को प्रोत्साहित करें।

12. पक्षियों का प्रवास

मौखिक

(क) पक्षी-विज्ञान से संबंधित सबसे विचित्र बात है पक्षियों का एक देश से उड़कर दूसरे देश को जाना और फिर लौटना अर्थात कुछ समय के लिए उनका प्रवास।

(ख) कि उन्हें (पक्षियों को) इस यात्रा के लिए कौन मजबूर करता है? ऐसी बीहड़ यात्राओं के खतरे मोल लेकर किस रास्ते से उन्हें होकर जाना चाहिए, इन सवालों का अभी तक संतोषजनक उत्तर नहीं मिल सका है।

(ग) साल में दो बार, बसंत और पतझड़ में।

(घ) प्रवासी चिड़ियों की जानकारी एकत्र करने में जो तरीका अधिकाधिक प्रयोग किया जाता है, वह है– उनकी टाँगों में एल्मुनियम के छल्ले पहना देना। चिड़ियों को पकड़कर, छल्ला पहनाया जाता है, रजिस्टर में लिखा जाता है और फिर छोड़ दिया जाता है।

लिखित

1. (क) किसी स्थान या देश से दूसरे स्थान या देश में जाना और लौटना 'प्रवास' कहलाता है।
   (ख) रोज़ी पेस्टर मार्च से सितंबर तक भारत-प्रवास करती हैं।
   (ग) चिड़ियाँ अकसर 600 से 1300 मीटर की ऊँचाई पर उड़ती हैं।
   (घ) क्योंकि रात के समय आक्रामकों से कम खतरा होता है।

2. (क) प्रवास-यात्रा पर निकलने से पहले चिड़ियाँ अनेक प्रकार की तैयारियाँ करती हैं। वे चरबी बढ़ाने के लिए अधिक मात्रा में खाना खाती हैं। यह चरबी यात्रा में उनके शरीर को ताकत प्रदान करती हैं। कुछ चिड़ियाँ अभ्यास करना और झुंड बनाकर उड़ना सीखना शुरू कर देती हैं।
   (ख) चिड़ियों की यात्रा में सूरज और तारों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। सूरज निकलने और डूबने से चिड़ियों को प्रस्थान के समय का संकेत मिलता है। सूर्य दिशा-सूचक और पथ-प्रदर्शक का कार्य करता है। रात के समय तारे उनका पथ-प्रदर्शन करते हैं।
   (ग) चिड़ियों के प्रवास पर जाने के चार मुख्य कारण हैं–
   (*i*) भयंकर सरदी से बचाव करना;
   (*ii*) अंडे देना
   (*iii*) वर्ष की विभिन्न प्रकार की मौसमी स्थितियों के अनुरूप रहने योग्य स्थितियाँ खोज निकालना;
   (*iv*) मन-बहलाव

3. 1. (क), 2. (ख), 3. (ग), 4. (ग)

4. प्रवास-यात्रा के लिए चिड़ियों को कई प्रकार की तैयारियाँ करनी पड़ती हैं। रास्ते में इन्हें विभिन्न आक्रामकों से खतरा रहता है। समुद्रों को पार करने में इन्हें लगातार काफ़ी समय तक उड़ना पड़ता है। कई बार प्रवासी पक्षी बुरे मौसम, आँधी आदि में फँस जाते हैं। ऐसे में बहुत-सी चिड़ियाँ मर जाती हैं इसलिए लेखक ने ऐसा बताया है।

5. **संकेत** : अनेक प्रकार के कार्य किए होंगे; प्रवासी पक्षियों के जन्म-स्थान का अध्ययन किया होगा; वहाँ के मौसम के बारे में जानकारी एकत्र की होगी; पक्षियों की प्रवास-यात्रा के मार्ग का अध्ययन किया होगा; जिस स्थान पर ये पक्षी प्रवास हेतु पहुँचते हैं, वहाँ की कई प्रकार की जानकारी एकत्र की होगी; इन पक्षियों के प्रवास का समय नोट किया होगा; पक्षी किस प्रकार अपना रास्ता खोजते हैं– इसका अध्ययन किया होगा; आदि।

भाषा-बोध

1. (क) राहुल भी रोहन **की भाँति** परिश्रमी है।
   (ख) हमारा स्कूल झील **के पास** है।
   (ग) अधिक व्यस्त होने **के कारण** मैं मैच नहीं देख सका।
   (घ) आज तुम दादा जी **के साथ** चले जाना।

2. (ख) मार्च (कालवाचक)
   (ग) सावधानी से (रीतिवाचक)
   (घ) तेज़ (रीतिवाचक)
   (ङ) खूब (परिमाणवाचक)
   (च) दक्षिण की ओर (स्थानवाचक)
   (छ) कभी-कभी (कालवाचक)

3. (ख) लगभग, (ग) बहुत, (घ) सबसे, (ङ) नई-नई, (च) कुछ

4.

एकवचन	बहुवचन	वचन का तिर्थक रूप
कली	कलियाँ	कलियों से
आँधी	आँधियाँ	आँधियों में
वृत्ति	वृत्तियाँ	वृत्तियों द्वारा
शर्त	शर्तें	शर्तों से
कोपल	कोपलें	कोपलों को
देश	देश	देशों का
स्थान	स्थान	स्थानों पर

रचनात्मक कार्य

1. बच्चों को प्रोत्साहित करें कि एक बार किसी स्थान पर अपने अभिभावकों के साथ घूमकर आएँ।

2. **संकेत :** शिकारी पक्षी, शिकारी लोग।

3. स्वयं कीजिए।

4. **संकेत :** अस्पताल भगवान महावीर के नाम पर, अनेक समाज-सेवी संस्थाएँ यहाँ बीमार पक्षी पहुँचाती हैं।

5. स्वयं कीजिए।

6. विद्यार्थी आपस में चर्चा कर सके इसके लिए अनुशासनबद्ध समय दें। बीच-बीच में किसी विद्यार्थी / विद्यार्थियों से प्रश्न भी पूछे जा सकते हैं।

13. साइकिल की सवारी

मौखिक

(क) कूदकर चढ़ना, पैर चलाना और कोई रास्ते में खड़ा है तो टन-टन करके घंटी बजाना।

(ख) बहस न करके, मरम्मत करने के लिए कहा।

(ग) लेखक अपने घरवालों को जहाँगीर के मकबरे पर ताँगे में बैठाकर भेज देंगे और खुद बाद में साइकिल पर सवार होकर आएँगे, तो सब हैरान हो जाएँगे।

(घ) जब वे साइकिल चलाते हुए घबरा रहे थे और हैंडल न घुमाए जाने पर ताँगे के नीचे आ गए।

लिखित

1. (क) जब-जब वे किसी को साइकिल की सवारी करते या हारमोनियम बजाते देखते थे।

   (ख) उनके मन में साइकिल चलाना सीखने का विचार तब आया जब उनके बेटे ने बिना किसी को बताए साइकिल चलाना सीख लिया।

   (ग) उन्होंने इसका कारण यह बताया कि इससे ताँगे का खर्च बच जाएगा।

   (घ) उनकी नज़र में बड़ी उम्र में साइकिल चलाना सीखना ठीक नहीं था। फिर वे इस सवारी को बढ़िया भी नहीं मानते थे।

2. (क) फ़ीस की बात सुनकर लेखक सपनों में खो गए। वे सोचने लगे कि साइकिल चलाना सीखकर वे एक ट्रेनिंग स्कूल खोल लेंगे। इस प्रकार की ट्यूशन से उन्हें तीन-चार सौ रुपए मासिक की आमदनी होने लगेगी।

   (ख) लेखक साइकिल चलाना सीखने की जल्दी में थे। इसी जल्दबाज़ी में उन्होंने पायजामा और अचकन दोनों उलटे पहन लिए थे। मज़ाक उड़ने के भय से वे घर वापस आ गए। इस प्रकार उनका पहला दिन मुफ़्त में गया।

   (ग) अनेक दृश्य हैं; विद्यार्थी किसी का भी वर्णन कर सकते हैं। उदाहरणार्थ : मुझे सर्वाधिक उस दृश्य से गुदगुदाया जिसमें लेखक साइकिल पर सवार थे और मन-ही-मन बहुत प्रसन्न थे लेकिन किसी को दूर से देखते ही चिल्लाने लगते थे–साहब, ज़रा बाईं तरफ़ हट जाइए। दूर कोई गाड़ी देखते ही उनके प्राण सूख जाते थे। इस दृश्य में खुशी और घबराहट का शानदार मिश्रण है।

3. 1. (घ), 2. (ग), 3. (ख), 4. (क)

4. (क) साइकिल सवारी एक ऐसी कला है जिससे हमारा समय बचता है। हमें कहीं भी जाना हो, झट से साइकिल निकाली, पैडल चलाए और पहुँच गए अपनी मंज़िल पर। न पैट्रोल का झंझट न डीज़ल की चिकचिक। हारमोनियम की अलग ही विशेषता है। जब मन उदास हो, समय बिताए न बीत रहा हो, तब यह मन बहलाता है।

   (ख) यह कहावत सौ प्रतिशत सही है। रावण का बुरा वक्त आया तो उसने श्रीराम से शत्रुता कर ली अर्थात उसकी बुद्धि भ्रष्ट हो गई। इसी प्रकार लेखक अपने बारे में कहते हैं कि उनका बुरा वक्त आया तो उनकी भी बुद्धि भ्रष्ट हो गई। यह विचार तक उनके मन में नहीं आया कि हैंडल घुमाया भी जा सकता है। यदि वे ठीक समय पर हैंडल घुमा लेते तो टक्कर और चोट से बच जाते।

5. **संकेत :** निस्संदेह सबको आना चाहिए, यह मुफ़्त की सवारी है, ईंधन की कोई आवश्यकता नहीं, प्रदूषण नहीं फैलाती, शहर में छोटा-लंबा कैसा भी सफ़र किया जा सकता है, भीड़-भाड़ वाले मार्गों पर अति उपयोगी, कसरत का माध्यम, सड़क के नियमों का ज्ञान होता है, स्कूटर या मोटरसाइकिल सीखने में सहायक सिद्ध होती है, लाभ-ही-लाभ हैं।

भाषा-बोध

1. (क) को, (ख) के, (ग) से, (घ) का, (ङ) की

2. (ख) झक मार रहा, (ग) कानों-कान खबर न, (घ) दाँत पीसने, (ङ) जान में जान

3. (*i*) पूरे शहर में, (*ii*) पूरे गाँव में, (*iii*) पूरे देश में, (*iv*) पूरे घर में, (*v*) पूरे स्कूल में

4. (*i*) घंटी, (*ii*) परंतु, (*iii*) पंडित, (*iv*) गंगा, (*v*) चंचल, (*vi*) आरंभ

रचनात्मक कार्य

1. **संकेत :** ऐसे अंधविश्वासों को मानना सरासर मूर्खता है; वहमी लोग ऐसा करते हैं; अंधविश्वास का अर्थ है–पुरातन युग में रहना, आधुनिकता को स्वीकार न

करना, विज्ञान को मान्यता न देना; पढ़े-लिखे और वैज्ञानिक दृष्टिकोण रखने वाले व्यक्ति अंधविश्वासों से परे रहते हैं।

2. बच्चे अपने अनुभव से बताएँ। (टेलीविज़न पर बच्चों की निपुणता से संबंधित अनेक कार्यक्रम)

3. 'साइकिल की सवारी' विषय पर अनुच्छेद 'अपनी समझ से' उपशीर्षक पर आधारित।

4. बच्चों को कुछ हास्य-भरी घटनाएँ सुनाने हेतु प्रेरित करें। स्वयं भी उत्साह से भाग लें। हास्य स्वस्थ शरीर व मन-मस्तिष्क के लिए अति उपयोगी व प्रेरक होता है।

5. **संकेत :** लोग स्वस्थ रहेंगे; इससे लोग कम बीमार होंगे और दवाइयों पर खर्च होने वाली विदेशी मुद्रा बचेगी; इसी प्रकार ईंधन का खर्चा बचेगा और उससे भी विदेशी मुद्रा की बचत होगी; प्रदूषण कम होगा; सड़कों पर भीड़-भाड़ कम होगी; हर व्यक्ति समय से घर से चलेगा और समय पर अपनी मंज़िल पर पहुँचेगा; लोगों में आडंबर (दिखावा) की प्रवृत्ति कम होगी; आज हर आदमी दूसरों को देखकर कार, स्कूटर, मोटरसाइकिल आदि खरीदना चाहता है।

14. माया मिली न राम

मौखिक

(क) हाथ जोड़कर एक पाँव पर बुत बनकर खड़ा रहा।

(ख) संत ने भक्त को समझाया कि ऐसी भक्ति से तो भगवान भी वश में हो जाते हैं इसलिए थोड़े से सोने के लिए वह क्यों अपनी भक्ति बेकार गँवा रहा है।

(ग) बूढ़ा बाप अचानक इसलिए उछला क्योंकि उसे याद आ गया था कि घर में ऐसी लोहे की बहुत सी चीज़ें हैं जिन्हें पारस से सोने का बनाया जा सकता है।

(घ) भक्त की बात सुनते ही बनिये ने मुनीम को शहर से इक्कीस गाड़ी लोहा लाने के लिए रवाना कर दिया परंतु भक्त को वह कम लग रही थीं और बनिया कह रहा था कि इतनी गाड़ियाँ बीस पीढ़ियों तक भी बहुत हैं।

(ङ) भक्त ने संत से थोड़ी और मोहलत देने को कहा।

लिखित

1. (क) यह लोहे को सोना बना देता था।
   (ख) भक्त की पत्नी को सोने के चंद्रहार की लालसा थी।
   (ग) महात्मा को देखते ही भक्त की सारी दृढ़ता जाती रही।
   (घ) उसने संत से प्रार्थना की कि वह कम-से-कम उसकी चिमटी को ही सोने का बना दें।

2. (क) बूढ़ी माँ नौ नकद, तेरह उधार में विश्वास रखती थी। वह चाहती थी कि उसी मौके पर घर में जो कुछ लोहे का था, उसी को सोने का बना लिया जाए। उसके अनुसार यदि वह इन्हीं चीज़ों को सोने का बना देख लेगी तो उसकी मुक्ति हो जाएगी।
   (ख) बनिये को भक्त के कहे पर विश्वास हो गया था। वह शहर से इक्कीस गाड़ी लोहा मँगवाने को तैयार हो गया। बनिये की शर्त यह थी कि लोहे से सोना बने माल में से वह आधा हिस्सा लेगा।
   (ग) उस समय बनिये की हालत पागलों जैसी हो रही थी। वह भगत के आगे गिड़गिड़ाया कि जितना लोहा उस समय उपलब्ध था, उसी को सोना बना लिया जाए। वह कारोबार से इसी सोने को हज़ार गुना कर देगा लेकिन भगत ने उसकी एक न सुनी। वह हर हाल में गाड़ियों की प्रतीक्षा करना चाहता था।

3. 1. (ख), 2. (ग), 3. (क), 4. (ख)

4. बिलकुल सही बात है। जो जेब में है, हाथ में है वही वास्तविकता है। जिसकी केवल कल्पना की जाए वह तो मन का ख्याली पुलाव है अर्थात कोरी कल्पना ही है। यह कल्पना पानी में दिखाई देने वाली परछाईं की भाँति है। पानी में थोड़ी-सी हलचल हुई कि समाप्त हो गई। आप वही खर्च कर सकते हो, जो आपके पास उपलब्ध है।

5. **संकेत :** अंतिम घड़ी तक प्रतीक्षा न करता; एक समय निश्चित करता कि इस समय तक जितना हो सकेगा, लोहा एकत्र करूँगा, इसके बाद एक पल भी इंतज़ार नहीं करूँगा; दूसरी विचार करने लायक बात यह है कि यह भी सोचता कि संत स्वयं ही सोना क्यों नहीं बना लेते; क्या उनके पास सोने से भी कीमती कोई उपलब्धि है; (वैसे, बच्चे अपने विचार अनुसार जो भी लिखें, वह सही ही है क्योंकि वे उनके अपने विचार होंगे; शिक्षकगण उचित मार्गदर्शन देकर उनका उत्साह बढ़ा सकते हैं)

भाषा-बोध

1. (*i*) दर्शन, (*ii*) जन्म, (*iii*) भक्ति, (*iv*) गृहस्थी

2. (*i*) बहुत अधिक, (*ii*) जीवन, (*iii*) मात्र, (*iv*) व्यर्थ, (*v*) विनती, (*vi*) बार, (*vii*) विश्वास, (*viii*) लाभ

3. केवल समझाने हेतु।

4. (क) भक्त द्वारा पारस लाया गया।
   (ख) पिता द्वारा लोहा इकट्ठा किया गया।

(ग) माँ द्वारा बेटे को समझाया गया।
(घ) भक्त द्वारा समय व्यर्थ गँवाया गया।
(ङ) भक्त द्वारा संत से मिन्नतें की गईं।

5.

जातिवाचक संज्ञा	भाववाचक संज्ञा
(*i*) गाँव	भक्ति
(*ii*) गाड़ी	कामना
(*iii*) पहाड़	मज़ा
(*iv*) आदमी	मेहनत
(*v*) घर	लालच

रचनात्मक कार्य

1. **संकेत :** हाथ आए अवसर का लाभ उठाने में ही बुद्धिमानी, समय निकलने पर केवल पछतावा हाथ लगता है, समय पर उचित कार्यवाही करने वाले ही सबसे अधिक लाभ में रहते हैं, सोचो, अगर पैसा कमाने की कोई योजना मिल जाए और सही समय पर उसके लिए कार्य न किया जाए तो क्या होगा, चुस्त और समय पर कार्यवाही करने वाले लाभ ले जाएँगे और सुस्त और ढीले लोग सोचते रह जाएँगे।
2. **संकेत :** संतों को भौतिक पदार्थों का लालच नहीं, सांसारिक मज़े उनके लिए छोटे, उन पर प्रभु नाम की मस्ती, यह मस्ती दुनिया की किसी भी मौज-मस्ती से बढ़कर।
3. **संकेत :** चोर-लुटेरों का भय, आयकर अफ़सरों का भय (इतना धन एक साथ कहाँ से आया?), माँगने वालों की भीड़ हो सकती थीं, कई अपने भी शत्रु बन सकते थे, और अधिक लालची बन सकता था, घमंड से भर सकता था, परिश्रम करना छोड़ पक्का आलसी बन सकता था, बुरी संगत का व बुरे कार्यों का शिकार हो सकता था।
4. स्वयं कीजिए।
5. **संकेत :** मीदास खुशी से पागल हो गया; वह बदहवासी में प्रत्येक चीज़ सोने की बनती गई; उसका लालच बढ़ता गया; वह बगिया पहुँचा; सारे पेड़-पौधों को छुआ; वे सोने के बन गए; ठंडी हवा बहनी बंद हो गई; फूलों की खुशबू समाप्त हो गई; उसका चलना तक दूभर हो गया क्योंकि वे भी सोने के बनकर भारी हो चुके थे; उसकी नन्हीं बेटी उसके पास पहुँची, प्यार से उसके सिर पर हाथ रखा; वह भी सोने की बन गई; रोने लगा; देवताओं के सामने गिड़गिड़ाया; मुझे सोना नहीं, अपनी हरी-भरी बगिया, अपनी बेटी चाहिए; देवताओं ने उसे पवित्र जल दिया; उसके छिड़काव से हर वस्तु पहले की हालत में आ गई; सबसे पहले उसकी प्यारी बेटी जिससे वह लिपटकर रोया।

15. जलियाँवाला बाग में बसंत

मौखिक

(क) कौए शोर मचा रहे हैं।
(ख) फूल-पौधे रूखे-रूखे झुलसे से हैं। कलियाँ खिली नहीं हैं। भंवरे अपनी गूँज से शोर नहीं मचा रहे। पूरा बाग खून से सना पड़ा है।
(ग) वायु से मंद चलने को इसलिए कहा गया है ताकि वह लोगों की दुख की आहों को संग उड़ाकर न ले जाए।

लिखित

1. (क) कलियाँ काँटों-सी, पौधे और फूल सूखे-सूखे या झुलसे हुए लग रहे हैं।
   (ख) वहाँ मरने वाले बच्चे छोटे और कोमल थे और वृद्ध बड़ी आयु के कारण सूखे हुए और कमज़ोर।
   (ग) यह इस बात का प्रतीक है कि शुभ के स्थान पर कुछ अशुभ हुआ है।
2. 1. (घ), 2. (क), 3. (ग), 4. (ग)
3. जलियाँवाला बाग में वैसाखी के दिन गोलीबारी हुई थी। वैसाखी पंजाबियों का प्यारा त्योहार है। इस अवसर पर लोग स्वतंत्रता की आशा से भरे वहाँ पहुँचे थे। गोलियाँ चलने से वे न केवल अपने प्यारे परिवार बल्कि अपनी मातृभूमि से भी बिछुड़ गए।
4. **संकेत :** घटना 13 अप्रैल, 1919 की; वैसाखी के पवित्र त्योहार का अवसर; अंग्रेज़ों ने निर्दोष भारतीयों पर गोलियाँ चला दीं; बच्चे, जवान, वृद्ध स्त्री-पुरुष सब इस गोलीबारी का शिकार हुए; पूरे बाग में चीत्कार मचा था; इसलिए इसे शोक-स्थान बताया है।

भाषा-बोध

1. (ख) तुम-से मित्रों से दुश्मन भले।
   (ग) कृष्ण-से प्रेमी अब कहाँ होते हैं।
   (घ) मुझे तो अध्यापिका माँ-सी, दीदी-सी लगती है।
   (ङ) भगवान करे तुम-सा भाई अगले जन्म भी मिले।
2. (ख) भारत का रत्न, (ग) सेना का पति, (घ) पूजा के हेतु, (ङ) ऋतु का राजा, (च) करुणा का भाव
3.

विशेषण	विशेष्य
(ख) कंटक	कुल
(ग) प्रिय	ऋतुराज (अधखिली कलियाँ)
(घ) मंद	चाल
(ङ) कोमल	बालक
(च) शुष्क	पुष्प

4. केवल समझाने हेतु।

रचनात्मक कार्य

1. स्वयं कीजिए।
2. **संकेत :** पूरे देश में आक्रोश की लहर दौड़ गई, अंग्रेज़ी शासन की घोर निंदा हुई, विरोध में प्रदर्शन किए गए, जुलूस निकाले गए।
3. स्वयं कीजिए।
4. स्वयं कीजिए।
5. स्वयं कीजिए।

16. राखी की कीमत

मौखिक

(क) बाघसिंह ने कहा कि ''राजपूत वीरता से लड़ रहे हैं, किंतु एक तो हमारी संख्या बहुत कम है, दूसरे शत्रुओं का तोपखाना आग उगल रहा है।''

(ख) बाघसिंह ने शंका जताई कि क्या हुमायूँ पुराना वैर भूल सकेगा?

(ग) हुमायूँ राखी पाकर बहुत खुश हुआ और हिंदूबेग को कहा कि कर्मवती ने मुझे अपना भाई बनाया है।

(घ) बहिन कर्मवती से कहना, हुमायूँ तुम्हारी माँ के पेट से पैदा नहीं हुआ तो क्या हुआ, वह तुम्हारे सगे भाई से बढ़कर है। मेवाड़ की इज़्ज़त मेरी इज़्ज़त है।

(ङ) हिंदूबेग और तातार खाँ ने हिन्दू-मुसलमान के धर्म का भेद जताया।

लिखित

1. (क) राखी भेजने से पहले रानी की बातचीत बाघसिंह और जवाहरबाई से हुई।
   (क) हुमायूँ ने कहा कि राखी सारे वैर भावों को जलाकर भस्म कर देती है।
   (क) उन्होंने कसम खाई थी कि वे मुगलों को हिंदुस्तान के बाहर खदेड़े बगैर चित्तौड़ में कदम न रखेंगे।
   (क) उन्होंने उन्हें जल्दी फ़ौज तैयार करने का आदेश दिया।

2. (क) जवाहरबाई ने हुमायूँ को राखी भेजने का विरोध किया था लेकिन रानी राखी भेजने के अपने निर्णय पर दृढ़ रहीं। रानी ने तर्क दिया कि मुसलमान भी हिंदुओं की तरह इनसान हैं। उनकी भी बहनें होती हैं। उनके भी हृदय हैं। यदि हम प्रार्थना करने मंदिर जाते हैं तो वे खुदा की इबादत (पूजा) करने मसजिद जाते हैं।

   (ख) एकांकी के अनुसार हुमायूँ एक भाव-भरे व्यक्ति थे। वे दूसरों की इज़्ज़त करना जानते थे, भले ही वह शत्रु ही क्यों न हो। वे रिश्तों की कद्र (इज़्ज़त) करते थे और उन्हें निबाहने में विश्वास करते थे। उनके दिल में रीति-रिवाज़ों व परंपराओं के लिए पूरा सम्मान था। वे सच्चे मुसलमान थे।

   (ग) (*i*) यह कथन बाघसिंह ने रानी कर्मवती से कहा। वास्तव में, रानी ने हुमायूँ को राखी भेजने का निर्णय लिया था। वे ऐसा मेवाड़ की रक्षा के लिए करना चाहती थीं। रानी ने जब बाघसिंह से परामर्श किया तो उन्होंने यह कहा। वे एक ऐसे वफ़ादार सेनापति थे, जो अपने स्वामी की हर आज्ञा का पालन करता हो।

   (*ii*) यह कथन हुमायूँ ने हिंदू बेग से कहा। वास्तव में, हिंदूबेग मेवाड़ की रक्षा के लिए मुगल सेना भेजने का विरोध कर रहा था लेकिन, हुमायूँ ने मन-ही-मन रानी कर्मवती को अपनी बहन स्वीकार कर लिया था। एक सच्चा मुसलमान होने के नाते उन्होंने यह कथन कहा।

3. 1. (क), 2. (घ), 3. (ख), 4. (ग)

4. यह पंक्ति रानी द्वारा बड़े दुख से कही गई। शत्रुओं ने चित्तौड़ पर हमला कर दिया था लेकिन राजपूत आपस में ही लड़ते रहते थे। और जहाँ फूट हो, वहाँ सब-कुछ नष्ट हो ही जाता है। यही राजपूतों के साथ भी हुआ। किसी भी संकट या बाहरी आक्रमण के समय वे एकजुट न हो सके और भारी हानि उठाई।

5. **संकेत :** बहुत भावपूर्ण दृश्य उपस्थित हो सकता था, हुमायूँ खुले दिन से रानी कर्मवती का स्वागत करते, उनकी मेहमाननवाज़ी करते, उनकी पूरी बात सुनते, उन्हें तुरंत सहायता देने का भरोसा देते, मान-सम्मान व उपहार आदि देकर उन्हें विदा करते।

भाषा-बोध

1. (क) (*i*) आज्ञा का पालन, (*ii*) रस्में और रिवाज़, (*iii*) विचार में मग्न, (*iv*) जन्म की भूमि, (*v*) सोच और विचार, (*vi*) गंगा का तट
   (ख) (*i*) सम् + तोष (*ii*) सम् + मति, (*iii*) सम् + कल्प, (*iv*) वि + छेद, (*v*) भाव + उक, (*vi*) दुस् + साहस

2. (ख) ही–मैं इतना **ही** खाऊँगा।
   (ग) बस–मुझे तो **बस** सोने दो।
   (घ) मात्र–मेरे पास **मात्र** दस रुपए हैं।

3. (ख) बारे में, (ग) के साथ, (घ) के बिना, (ङ) के पीछे, (च) के पश्चात

4. (क) सम्मति, (ख) संख्या, (ग) पश्चात्ताप, (घ) मनुष्यता, (ङ) इज़्ज़त, (च) खुशकिस्मती

रचनात्मक कार्य

1. महाराणा प्रताप

2. **संकेत :** बाहरी लोग फ़ायदा उठाते हैं, लड़ने वालों को भयंकर हानि होती है, बाद में दोनों पछताते हैं, लेकिन तब तक समय हाथ से निकल चुका होता है।

3. **संकेत :** आपस में बातचीत करके, मतभेद भुलाकर, एक-दूसरे को माफ़ करके, कड़वी बातें भूलाकर, एक साथ बिताए गए अच्छे समय को याद करके।

4. **संकेत :** मीठी ईद, बकरीद, मिलाद-उद-नबी

5. कहानी-लेखन हेतु उचित मार्ग-दर्शन करें।

17. तोते की शिक्षा

मौखिक

(क) क्योंकि तोता बड़ा मूर्ख था। उछल-कूद तो मचाता था परन्तु कायदा-कानून नहीं जानता था।
(ख) बढ़िया-सा पिंजरा बनवा दिया जाए।
(ग) क्योंकि उसे सोने के पिंजरे की देखभाल करनी पड़ती थी।
(घ) क्योंकि राजा का भानजा यह सोच रहा था कि तोते को पोथियाँ पढ़ाकर बुद्धिमान बनाया जा सकता है।
(ङ) यह देखने कि तोते की शिक्षा कैसी चल रही है?

लिखित

1. (क) तोता उछलता था, फुदकता था, उड़ता था।
   (ख) वे सोने के पिंजरे को बहुत बड़ी चीज़ समझ रहे थे, इसलिए उन्होंने उसमें रहने वाले तोते को भाग्यशाली माना।
   (ग) क्योंकि उन्हें मोटी कमाई में हिस्सा नहीं मिलता, इसलिए वे ओछी बातें करते हैं।
   (घ) राजा ने सरदार को ताकीद की कि वह निंदक को दंडित करे।

2. (क) जैसे ही राजा ड्योढ़ी पर पहुँचा, वहाँ भव्य आडंबर होने लगा। चापलूस विभिन्न वाद्य-यंत्र बजाने लगे। पंडित मंत्र-पाठ करने लगे। जिस-जिसने शिक्षा के काम से कमाई की थी, वे राजा की जय-जयकार करने लगे।
   (ख) तोता भले ही पिंजरे में कैद था लेकिन उसके भीतर तो पक्षी की ही आत्मा थी। एक पक्षी की भाँति वह स्वतंत्र होने की इच्छा करता था। सवेरा होते ही वह तरसता हुआ उजाले की ओर निहारने लगता था। उड़ने के लिए पंख फड़फड़ाने लगता था। कभी-कभी तो वह बस सोने की कठोर सलाखे काटने की कोशिश करता।
   (ग) निंदक एक साधारण व्यक्ति था लेकिन वह सच्चाई को पसंद करता था, आडंबर को नहीं। राजा जो कुछ अपने भानजे के माध्यम से करवा रहा था, वह आडंबर के अलावा और कुछ नहीं था। निंदक इसी बात के विरोध में था। हाँ, निंदक बिलकुल ठीक कार्य कर रहा था। एक अच्छे नागरिक की भाँति वह अपना कर्तव्य निभा रहा था और सच्चाई को सामने लाने की कोशिश कर रहा था।

3. 1. (घ), 2. (क), 3. (ख), 4. (घ)

4. कहानी में शिक्षा के नाम पर ढोंग किया जा रहा था। पक्षी के साथ उसके स्वभाव के विरुद्ध कार्य किए जा रहे थे। उसे पढ़ाने के नाम पर मंत्र जपे जा रहे थे, पोथियाँ उसके मुँह में ठूँसी जा रही थीं। हर वह कार्य किया जा रहा था, जिससे मोटी कमाई हो सके। यहाँ कहानीकार शिक्षा के नाम पर ढोंगों का विरोध कर रहे हैं। यह ऐसे ही है जैसे बच्चों के लिए बढ़िया इमारत का प्रबंध तो कर दिया लेकिन शिक्षक न हों।

5. यह कहानी शिक्षा व्यवस्था पर प्रहार करती है। आज भी कुछ लोग शिक्षा के नाम पर व्यवसाय करते हैं। शिक्षा पर कम और कमाई पर अधिक ध्यान केंद्रित करते हैं। वे अनाप-शनाप स्कीमें निकालते रहते हैं और उनके नाम पर पैसे माँगते हैं। कुछ चापलूस किस्म के व्यक्ति चापलूसी करके अपना उल्लू सीधा करते रहते हैं। ऐसे में साधारण व्यक्ति स्वयं को ठगा-सा महसूस करता है।

भाषा-बोध

1. (क) अचानक तेज़ बारिश होने लगी।
   (ख) धीरे-धीरे खाओ।
   (ग) आलू तेज़ी से छीलो।
   (घ) जल्दी चलो।

2. (*i*) आज तो आकाश में हज़ार-हज़ार पतंगें नज़र आ रही हैं। (*ii*) मेले में अनेक-अनेक लोग थे।

3. (क) कि, (ख) की, (ग) कि, (घ) कि, (ङ) की

4. (ख) बहुत, (ग) कैसी, (घ) कोई, (ङ) बिलकुल

5.

शब्द		उपसर्ग	मूल शब्द	प्रत्यय
अविद्या	–	अ	विद्या	×
विदेश	–	वि	देश	×

मुँहलगा	– ×	मुँह	लगा
प्रगति	– प्र	गति	×
मुकुलित	– ×	मुकुल	इत

रचनात्मक कार्य

1. **वर्तमान शिक्षा-प्रणाली : संकेत :** पुराने समय की तुलना में काफ़ी आधुनिक, रटने की बजाय समझने पर ज़ोर, सतत एवं व्यापक मूल्यांकन (CCE) पर आधारित, रचनात्मक क्रियाकलाप भी शामिल, शारीरिक दंड लगभग समाप्त, कम्प्यूटर शिक्षा का दौर, पहले से रोचक व आधुनिक पाठ्य-सामग्री।
2. बच्चे अपने अनुभव के आधार पर बताएँ। संकेत : याद करके लिखना; रट्टा मारने वाला बच्चा उस बच्चे से अधिक नंबर ले सकता है, जो हर चीज़ को समझ सकता हो; परीक्षा के दिन किसी कारण मन परेशान हो तो बुद्धिमान बच्चे के नंबर भी कम आ सकते हैं। (**नोट :** संकेत से अलग अनेक-अनेक कारण हो सकते हैं, बच्चों से ज़रूर पूछें।)
3. **संकेत :** निंदक न हों तो सरकार मनमाने नियम-कानून बनाएगी और मनमानी करेगी, आम जनता परेशान हो जाएगी, चतुर-चालाक लोग सबका हिस्सा खा जाएँगे, समाज में 'जिसकी लाठी उसकी भैंस' यानी 'शक्तिशाली का बोलबाला' का चलन बढ़ जाएगा।
4. **संकेत :** समाचार-पत्र, पत्रिकाएँ, रेडियो, टेलीविज़न संचार का साधन, सरकार के गलत कार्यों की निंदा करते हैं, जनता को उनके अधिकारों के बारे में जागरूक करते हैं, लोकतंत्र की रक्षा करते हैं। (बच्चों को भाषण-कला का संक्षिप्त ज्ञान दें व उचित मार्गदर्शन करें।)
5. **संकेत :** सरकार नियम-कानून बनाती है, विपक्ष किसी भी गलत कानून या गलत कार्य का विरोध करता है।

18. मेरी डायरी

मौखिक

(क) माता-पिता और बहन।

(ख) क्योंकि उनके कंधों पर बड़े-बड़े थैले और बैग थे जिनमें ठूँस-ठूँसकर सामान भरा हुआ था।

(ग) 'हम' ऐन फ्रेंक, उनके माता-पिता और बहन हैं। जहाँ पर वे छुपे हुए थे वहाँ का दरवाज़ा बहुत छोटा था। इस कारण वह निकलते-बढ़ते उससे टकराते रहते थे। जिस कारण उनके सिर पर गुमड़ निकल आए थे।

(घ) ऐन फ्रैंक के पिताजी और दादाजी पहले काफी अमीर थे। धन-दौलत की कोई कमी नहीं थी परंतु वह विश्व युद्ध की वजह से खत्म हो गई। अब वे इतने गरीब हो गए हैं कि फ्राइंग पैन में से बचा-खुचा खाना खुरचकर खा रहे हैं इसलिए पापा को अपने आप पर हँसी आ गई।

लिखित

1. (क) वे हिटलर के यहूदी विरोधी कानूनों के कारण दुख झेल रहे थे।
   (ख) उन्हें हर समय यह डर रहता था कि कहीं पड़ोसी उनके वायरलेस की आवाज़ न सुन लें।
   (ग) हिटलर की जान बच जाने को ऐन फ्रैंक ने 'दुर्योग' कहा है।
   (घ) नहाने-धोने का काम एक टब में पूरा करके गुसलखाने की कमी को पूरा किया जा रहा था।
2. (क) हिटलर यहूदियों से नफ़रत करता था। उसके कई आदेशों ने यहूदियों की आज़ादी को छिन्न-भिन्न कर दिया था। जैसे–यहूदियों को हर समय एक पीला सितारा टाँके रहना होता था। उन्हें ट्रामों पर चढ़ने की और खुद की कार में चलने की मनाही थी। उन्हें और भी कई कामों की मनाही थी, जैसे–रात आठ से सुबह छह बजे तक गलियों और सड़कों पर घूमना, नाटक या सिनेमा देखना, नाव खेना, खेल-कूद में हिस्सा लेना, ईसाइयों से मिलने उनके घर जाना आदि।
   (ख) ऐन फ्रैंक और उसका परिवार मि० फ्रैंक (ऐन के पिता) के आफ़िस की इमारत में ही छिपा था। सीढ़ियों के ऊपर दाईं तरफ़ एक दरवाज़ा था। यह दरवाज़ा घर के पिछवाड़े उनकी गुप्त एनेक्सी की तरफ़ जाता था। इस मैले से दरवाज़े के पीछे कई कमरे थे। सीढ़ियों की दाईं तरफ़ स्नानघर तथा बिना खिड़कियों वाला एक कमरा था। इसमें एक वाशबेसिन था। दरवाज़े से ऐन फ्रैंक और उसकी बहन मार्गोट के कमरे की तरफ़ जाया जा सकता था।
   (ग) ऐन फ्रैंक इस कल्पना से प्रसन्न हुई जा रही थी कि वे (ऐन व उसकी बहन) अक्टूबर से फिर स्कूल जा पाएँगी। इसका कारण यह था कि उसे पूरी आशा हो गई थी कि तब तक या तो युद्ध समाप्त हो जाएगा या हिटलर मारा जाएगा। उस समय तक सेना कई अधिकारी और जनरल युद्ध से तंग हो चुके थे।
3. 1. (घ), 2. (घ), 3. (ग), 4. (ख)
4. 'सेल्फ़मेड' का अर्थ होता है–अपने दम पर कुछ बनना या कर दिखाना। इस पंक्ति में 'वे' शब्द ऐन फ्रैंक के दादा माइकेल फ्रैंक के लिए आया है। उनका एक बैंक था और वे लखपति बन गए। यह धन उन्होंने अपनी मेहनत के दम पर कमाया था।

5. **संकेत :** अनेक समझौते करने पड़ सकते हैं, जिसने खूब मौज उड़ाई हो, उसे भूखे या आधे पेट गुज़ारा करना पड़ सकता है, फटे-पुराने वस्त्र पहनने पड़ सकते हैं, सख्त फ़र्श पर सोना पड़ सकता है, पूरा समय तनाव में गुज़ारना पड़ सकता है। आज़ाद रहने वाले व्यक्ति को लंबे समय तक दम साधे छुपकर रहना पड़ सकता है।

भाषा-बोध

1. (*i*) मीरा अपने आप घर चली जाएगी।
   (*ii*) शिवाजी ने औरंगज़ेब का साम्राज्य छिन्न-भिन्न कर दिया।
   (*iii*) रॉकेट एक-के-बाद-एक छूटते चले गए।
   (*iv*) सब-के-सब फ़िल्म देखने चल पड़े।
   (*v*) परसो कोई रिक्शा नहीं मिला, मैं जैसे-तैसे स्कूल पहुँचा।
2. (क) हमें गुप्त स्थान पर छिपकर रहना पड़ा।
   (ख) हमें टिन के टब में नहाना पड़ा।
   (ग) योजना दस दिन पीछे खिसकानी पड़ी।
   (घ) साइकिलें छुपाकर रखनी पड़ीं।
3. (क) बगीचे में तथा आठ बजे के बाद (दोनों ठीक हैं, कोई एक लिखी जा सकती है)
   (ख) हर समय
   (ग) 16 जुलाई
   (घ) तीन दिन में तथा हमारे माथे पर
   (ङ) पूरा दिन
4. आज़ादी, बचपन, शरण, मनोरंजन, शांति, जवानी
5. (*i*) जादूगरी, (*ii*) बाज़ीगरी, (*iii*) खातिरदारी
6. शुद्ध उच्चारण हेतु बच्चों का मार्ग-दर्शन करें। एक-दो शब्दों के उच्चारण शिक्षकगण द्वारा किए जा सकते हैं।

रचनात्मक कार्य

1. **संकेत :** हर समय तनाव में रहना, जान का खतरा मँडराना, दैनिक ज़रूरत की वस्तुओं का अभाव होना, उपलब्ध चीज़ें महँगी हो जाना, रात को प्रकाश न कर पाना, कई प्रकार के सख्त आदेशों का पालन करना, जीवन अस्त-व्यस्त होना।
2. डायरी-लेखन हेतु बच्चों को प्रोत्साहित करें व मार्ग-दर्शन करें।
3. **संकेत :** मानसिक तनाव, बाहर निकलने, घूमने-फिरने तथा मित्रों से मिलने को मन मचलना, उदास होना।
4. पूरा दिन न सही कुछ समय के लिए बच्चों को मौन धारण करने की प्रेरणा दें।
5. **संकेत :** अपने अनुभव लिखते रहना, संकट के समय हौसला न डिगाना, परिस्थितियों के अनुसार स्वयं को ढालना।
6. **संकेत :** कई वैज्ञानिक अनुसंधानों में सहायता प्रदान की, परमाणु बम का आविष्कार किया।

मॉडल प्रश्न पत्र – I

1. (क) उसे डर लग रहा था कि मास्टर जी न जाने कौन-सा सवाल पूछ लें इसलिए उसका मन घबरा रहा था।
   (ख) बिना साहस के छोटा-बड़ा कोई काम संभव नहीं, न ही किसी जाति या देश का इतिहास बन सकता है।
   (ग) तमिलनाडू में यह कहावत प्रचलित है कि ऐसे स्थान पर निवास मत करो जहाँ मंदिर न हो।
   (घ) इसके लिए पूरी शिष्टता से पूछना पड़ता था–माफ़ कीजिए, क्या मैं अंदर आ जाऊँ?
2. (क) सत्साहसी में एक ऐसी गुप्त शक्ति होती है जिसके बल से वह किसी अनजान व्यक्ति के प्राण बचाने को भी तत्पर हो जाता है। उसी शक्ति की प्रेरणा से वह अपने प्राणों की ज़रा भी चिंता नहीं करता और हर प्रकार का दुख प्रसन्नतापूर्वक सहन करता है। उसके मन में स्वार्थ के विचार नहीं आते।
   (ख) जब पंडितजन चलने लगे तो गांधी जी ने उनसे हरिजनों के लिए पैसे माँगे पंडितजन ने पैसे दिए भी। फिर वे (गांधी जी) उनसे अपने साथ यात्रा पर चलने का अनुरोध करने लगे। गांधी जी चाहते थे कि कोई ब्राह्मण ही अस्पृश्यता के विरुद्ध बोले।
   (ग) तोत्तो-चान झूठ बोल रही थी। उसने माँ से कहा कि वह यासुकी-चान के घर डेनेनचोफु जा रही है, जबकि वह स्कूल जा रही थी इसलिए उसने माँ की आँखों में नहीं झाँका। झूठ बोलने वालों में आँख मिलाने की हिम्मत नहीं होती। आँख मिलाने से झूठ पकड़े जाने का डर रहता है।
3. (क) (*iii*), (ख) (*i*), (ग) (*iv*), (घ) (*iii*), (ङ) (*iv*)
4. (क) मास्टर जी की बातें सुनकर अप्पाराव को पैसे (धन) का महत्त्व समझ में आ गया। तब उसे एहसास हुआ कि वह कितनी फ़ज़ूलखर्ची करता है। ऊँचे सपने धन से ही पूरे होते हैं। मास्टर जी की बातें सुनकर उसने मन में निश्चय कर लिया था कि अब वह फ़ज़ूलखर्ची नहीं करेगा। वह बिलकुल नया, अलग अप्पाराव बन गया।

(ख) यह कथन सौ प्रतिशत सही है। अक्षरों की खोज से पहले हर चीज़ अनुमान पर आधारित है। अक्षरों की खोज के बाद से मानव अपने विचार और अपने हिसाब-किताब को लिखकर रखने लगा। अक्षरों की शुरुआत के बाद से ही इतिहास आरंभ हुआ। किसी जाति या देश का इतिहास तब से शुरू हुआ माना जाता है जब से मनुष्य के लिखे हुए लेख मिलने लग जाते हैं।

(ग) इन पंक्तियों में कवि बच्चों (युवा पीढ़ी) को प्रेरित कर रहे हैं। वे बच्चों से कह रहे हैं कि तुम मूल रूप से (बिलकुल) नए बनो। अपने स्वभाव से जियो और निर्णय लो। तुम इतने आधुनिक बनो जितनी बनाने की कला है अर्थात नए-से-नए आधुनिक-से-आधुनिक बनो।

5. (*i*) लड़कपन, (*ii*) छुटपन, (*iii*) लड़ाई, (*iv*) कमाई

6. (*i*) प्रशंसनीय, (*ii*) सम्मानीय, (*iii*) पूजनीय, (*iv*) स्वार्थी

7. (*i*) सर्व + अधिक, (*ii*) शंकर + आचार्य, (*iii*) रथ + उत्सव, (*iv*) पर + उपकार

8. (*i*) बाहरी, (*ii*) पहली, (*iii*) कमज़ोर, (*iv*) निजी

9. (*i*) सुगंध, (*ii*) जीवन, (*iii*) भाग्य, (*iv*) प्रसन्न

10. **संकेत :**

सेवा में
प्रधानाचार्य
---------- स्कूल/विद्यालय

श्रीमान जी,

विनम्र निवेदन है कि हमारा पुस्तकालय बहुत बड़ा है; विभिन्न विषयों की अनेक पुस्तकें; हिंदी, अंग्रेज़ी, पंजाबी, उर्दू के समाचार-पत्र; लेकिन बाल-साहित्य की भारी कमी; छोटे बच्चे पढ़ने की इच्छुक, मगर उनकी रूचि की पत्रिकाएँ नहीं; आपसे अनुरोध है इस कमी को शीघ्र पूरा करें; बच्चे अपने समय का सदुपयोग स्वस्थ मनोरंजन के लिए कर पाएँ; अति आभारी रहूँगा;

आपका आज्ञाकारी शिष्य

मॉनीटर : कक्षा 7-अ

11. **संकेत : बचत का महत्त्व :** बचत की वास्तविक कमाई, आड़े मौके काम आती है, दिमाग तनाव-रहित रहता है, दूसरों के आगे हाथ नहीं फैलाने पड़ते, अपने साथ-साथ समाज और देश की भी भलाई, हमारी बचत दूसरों का भला भी कर सकती है और उन्हें राह भी दिखा सकती है, बचत करने की आदत बचपन से ही डालनी चाहिए।

सत्साहस : साहसी व्यक्ति ही इतिहास में स्थान बनाते हैं। साहसी लोगों को ही दुनिया याद करती है। अर्जुन, भीम, भीष्म, अभिमन्यु ने अदम्य साहस का परिचय दिया। भीष्म और अभिमन्यु को तो महाभारत के युद्ध में अपने प्राण तक गँवाने पड़े लेकिन वे अपने कर्तव्य से पीछे नहीं हटे। इसीलिए उनके बारे में ऐसा कहा गया है।

संकेत : सत्साहस : कई लोग आज भी दूसरों की जान बचाने के लिए अपनी जान की बाज़ी लगा देते हैं, कई महिलाओं की सुरक्षा के लिए बदमाशों से भिड़ जाते हैं, कुछ लोगों ने अपनी जान जाने का खतरा उठाकर भी लुटेरों को पकड़ा है, आतंकवादियों के अपवित्र कार्यों को होने से रोका है।

दुस्साहस–कुछ लोग फ़िल्मी स्टंट की नकल कर जान गँवा देते हैं या अपंग हो जाते हैं; कुछ अपहरण, लूट-पाट, ठगी, डकैती और स्त्रियों की इज़्ज़त लूटने में संलिप्त हैं; कुछ अपने देश की जासूसी कर शत्रुओं को महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ प्रदान कर देते हैं।

पर्यटन का जीवन में महत्त्व : पर्यटन हमारी उबासी व बोझिलता को दूर करने में सहायक, शरीर व मन-मस्तिष्क को तरोताज़गी, नए अनुभव, नया ज्ञान, नई जानकारी, नई संस्कृति व परंपराओं से परिचय, देश की एकता में सहायक, स्थानीय लोगों को रोज़गार देने में सहायक, पर्यटन जीवन का हिस्सा होना चाहिए।

मॉडल प्रश्न पत्र – II

1. (क) प्रयाग सहनी बिसेसर के दादा जी थे।
(ख) चिड़ियाँ अकसर 600 से 1300 मीटर की ऊँचाई पर उड़ती हैं।
(ग) यह लोहे को सोना बना देता था।
(घ) उन्हें हर समय यह डर रहता था कि कहीं पड़ोसी उनके वायरलेस की आवाज़ न सुन लें।

2. (क) बिसेसर के दादा जी समझदार और अनुभवी व्यक्ति थे। उन्होंने खेल-ही-खेल में बिसेसर को जाल की मरम्मत करना, नया जाल बनाना सिखला दिया था। उन्होंने उसे जाल के धागे, जाल को सँभालने और फेंकने के बारे में भी सिखाया।
(ख) चिड़ियों की यात्रा में सूरज और तारों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। सूरज निकलने और डूबने से चिड़ियों को प्रस्थान के समय का संकेत मिलता है। सूर्य

दिशा-सूचक और पथ-प्रदर्शक का कार्य करता है। रात के समय तारे उनका पथ-प्रदर्शन करते हैं।

(ग) निंदक एक साधारण व्यक्ति था लेकिन वह सच्चाई को पसंद करता था, आडंबर को नहीं। राजा जो कुछ अपने भानजे के माध्यम से करवा रहा था, वह आडंबर के अलावा और कुछ नहीं था। निंदक इसी बात के विरोध में था।

हाँ, निंदक बिलकुल ठीक कार्य कर रहा था। एक अच्छे नागरिक की भाँति वह अपना कर्तव्य निभा रहा था और सच्चाई को सामने लाने की कोशिश कर रहा था।

3. (क) (*i*), (ख) (*iv*), (ग) (*iv*), (घ) (*iii*), (ङ) (*i*)

4. (क) साइकिल सवारी एक ऐसी कला है जिससे हमारा समय बचता है। हमें कहीं भी जाना हो, झट से साइकिल निकाली, पैडल चलाए और पहुँच गए अपनी मंज़िल पर। न पैट्रोल का झंझट न डीज़ल की चिकचिक। हारमोनियम की अलग ही विशेषता है। जब मन उदास हो, समय बिताए न बीत रहा हो, तब यह मन बहलाता है।

(ख) बिलकुल सही बात है। जो जेब में है, हाथ में है वही वास्तविकता है। जिसकी केवल कल्पना की जाए वह तो मन का ख्याली पुलाव है अर्थात कोरी कल्पना ही है। यह कल्पना पानी में दिखाई देने वाली परछाईं की भाँति है। पानी में थोड़ी-सी हलचल हुई कि समाप्त हो गई। आप वही खर्च कर सकते हो, जो आपके पास उपलब्ध है।

(ग) इन पंक्तियों में कवयित्री बसंत को संबोधित कर रही हैं। वे जलियाँवाला बाग में शहीद हुए शहीदों को श्रद्धांजलि दे रही है। वे बसंत से कह रही है कि तुम अपने संग फूल तो लाना लेकिन वे अधिक चटकीले न हों। उनमें हलकी सुगंध हो तथा थोड़े गीले हों (जैसे आँसू बहने से पलकें गीली हो जाती हैं)। तुम यहाँ आकर ऐसा भाव मत दिखाना कि तुमने यहाँ आकर कोई उपकार किया है। अपने संग लाए फूल तुम उन शहीदों की याद में पूजा के लिए बिखेर देना।

5. उन्होंने बिसेसर को क्या-क्या नहीं सिखला दिया। जाल की मरम्मत करना, नया जाल बनाना।

6. (*i*) खूब, (*ii*) मार्च, (*iii*) सावधानी से, (*iv*) कोई क्रिया विशेषण नहीं

7. (*i*) कुछ काम न आना, (*ii*) बहुत अधिक परिश्रम करना

8. (*i*) आज्ञा का पालन, (*ii*) रस्में और रिवाज़, (*iii*) विचार में मग्न, (*iv*) जन्म की भूमि

9. (*i*) की, (*ii*) कि, (*iii*) की, कि

10. **संकेत :** संबोधन

माता जी का पत्र मिला; पढ़कर पता चला कि आजकल काफ़ी बीमार और सुस्त रहते हो; पूर्व-वार्षिक परीक्षा में तुमने 95% अंक प्राप्त किए हैं; केवल पढ़ाई ही जीवन नहीं है; पढ़ाई के साथ-साथ खेल-कूद पर भी ध्यान दो; स्वस्थ रहोगे; स्वास्थ्य से ही जीवन में सर्वोत्तम मिलता है; आशा है मेरे सुझाव पर ध्यान दोगे; आज से ही खेल-कूद के लिए समय निश्चित कर लो; माता-पिता को चरण-वंदना, रिया को प्यार; शुभ आशीर्वाद; तुम्हारा अग्रज ----------

11. **संकेत :**

(क) **बसंत ऋतु :** ऋतुओं का राजा; खेतों-बगिया में फूलों की बहार; खेतों में सरसों व सूरजमुखी के फूल; बगिया में गेंदे के फूल; चारों ओर पीले रंग की धूम; ठंडा-मीठा मौसम; न गरमी, न सरदी; पेड़ों पर नए-नए कोमल, मनभावन पत्ते; आकाश में पतंगें; आनंद-उल्लास की ऋतु।

(ख) बच्चे अपने ही अनुभव से लिखें।

(ग) **बाढ़ का प्रकोप :** बाढ़ आने पर विनाशकारी दृश्य, चारों ओर पानी ही पानी लेकिन पीने को पानी उपलब्ध नहीं, घरों का गिरना, पशुओं का मरना, बीमारियों का फैलना, घरेलू सामान नष्ट होना, फ़सलें तबाह होना, खाने के लाले पड़ना, किसी सुरक्षित स्थान पर शरण लेना, अपने ही देश में शरणार्थी होना।